वर्ष : 2024-25
अंक- द्वितीय

धरा गुर्जरी

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा – II)

गुजरात,अहमदाबाद

अक्षरधाम मंदिर

गुजरात में स्थित अक्षरधाम मंदिर का निर्माण भगवान स्वामीनारायण ने लगभग 19 वीं ईस्वी में करवाया था। यह भारत का पहला अक्षरधाम मंदिर है, जो गुजरात राज्य के गांधीनगर शहर में स्थित है।

अक्षरधाम मंदिर काफी विस्तृत जगह पर फैला हुआ है। इस मंदिर की ऊंचाई 32 मीटर, लम्बाई 73 मीटर और चौड़ाई 39 मीटर है। कहा जाता है कि इस मंदिर के निर्माण में कहीं भी इस्पात या सीमेंट का इस्तेमाल नहीं किया गया है। क्योंकि इस मंदिर का निर्माण 6000 गुलाबी बलुआ पत्थरों से किया गया है।

इसके अलावा, यह भी कहा जाता है कि इस मंदिर को पूरा बनने में लगभग 5 साल लगे थे। साथ ही, इस मंदिर की संरचना लगभग 11000 कारीगरों ने मिलकर खड़ी की थी। आपको बता दें कि यह पूरा मंदिर 5 प्रमुख भागों में बांटा हुआ है, यहां कई खूबसूरत मूर्तियां भी रखी हुई हैं।

अक्षरधाम मंदिर गुजरात के सबसे खूबसूरत मंदिरों में से एक है, जो पूरे भारत में अपनी विशाल वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर अपनी हस्तशिल्प कलाओं के लिए भी जाना जाता है। गुजरात में मौजूद सभी मंदिरों में अक्षरधाम मंदिर सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। यह व्यापक रूप से अपनी खूबसूरत पत्थर की वास्तुकला के लिए जाना जाता है। इसलिए यह भारत का सबसे बड़ा मंदिर है।

धरा गुर्जरी परिवार

वर्ष:2024-25 द्वितीय अंक

प्रधान संरक्षक:

श्री बिजित कुमार मुखर्जी, प्रधान महालेखाकार

संरक्षक:

श्री सतीश नानाजी वासनिक, व.उपमहालेखाकार

संपादक:

श्रीमती बबिता, सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रकाशन सहयोग

1. श्री ललित कुमार गुप्ता, व.हिंदी अनुवादक
2. सुश्री हेमा प्रजापति, क.हिंदी अनुवादक
3. श्री अनिल ओड़, डी.ई. ओ.

आवरण पृष्ठों के चित्र एवं विवरण - गुजरात टूरिज़्म से साभार

संस्कृत भाषा विश्व की सबसे प्राचीन भाषा में शामिल है जिससे देवनागरी लिपि सृजित हुई और जो हिंदी भाषा की भी जननी है, यह भाषा जितनी प्राचीन है उनती ही वैज्ञानिक भी है। संस्कृत में ऐसे कई श्लोक हैं जो व्यक्ति को जीवन में सही और गलत के बीच का अंतर समझाने का कार्य करते हैं। संस्कृत के एक एसे ही प्रेरणादायक श्लोक को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है:-

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

क्षुरासन्नधारा निशिता दुरत्यद्दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥"

उद्धृत श्लोक का अर्थ है कि उठो, जागो, और अपने लक्ष्य को प्राप्त करो।

भले ही रास्ते बहुत कठिन और अत्यन्त दुर्गम हों,

लेकिन विद्वानों का कहना हैं कि कठिन रास्तों पर चलकर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।.... (अथर्ववेद)

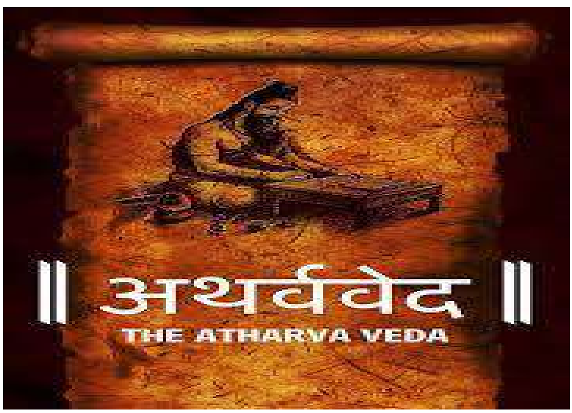

<u>संपादकीय</u>

सहायक निदेशक (राजभाषा) की कलम से

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद के कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" का वर्ष 2024-25 का द्वितीय अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

"धरा गुर्जरी" में हिंदी की रचनाओं के माध्यम से पत्रिका को गौरवान्वित करने वाले कार्यालय के सदस्यों ने अपने स्वरचित रचनाओं, संस्मरणों, विचारों, कविताओं के माध्यम से अपने अनुभवों व अपनी सृजनशीलता को पत्रिका में समाहित किया है।

मैं संपादक एवं संरक्षक मंडल की ओर से प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) कार्यालय के सदस्यों का धन्यवाद करते हुए आशा करती हूँ कि कार्यालय के कार्मिक भविष्य में भी अधिकाधिक संख्या में उत्कृष्ट स्वरचित रचनाएँ प्रदान करते रहेंगें और इस पत्रिका को उच्चतर, पठनीय, रुचिकर और हिंदी के विकास में अग्रसर बनाने का निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

अस्वीकरण - इस अंक में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचारों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उत्तरदायित्व स्वयं रचनाकारों का है जिन से संपादक मण्डल या कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रधान संरक्षक का संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा ई –पत्रिका धरा गुर्जरी के अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रतिभा को एक मंच प्रदान करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है। यह पत्रिका सरकारी कामकाज में व्यस्त केन्द्रीय कार्मिकों को अपने विचार एवं प्रतिभा को दर्शाने का एक अवसर प्रदान करती है साथ ही कार्यालय में वर्ष के दौरान होने वाली गतिविधियों को भी प्रतिबिंबित करती है।

“धरा गुर्जरी” पत्रिका में अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी पत्रिका को और अधिक पठनीय बनाने वाले सभी रचनाकारों, संपादक मण्डल को अपना सहयोग प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। मैं आशा करता हूं कि कार्यालय के कर्मचारी एवं अधिकारीगण राजभाषा हिंदी का प्रयोग कार्यालय के दैनिक कार्यों में अधिकाधिक करने का प्रयास करेंगे। मैं पत्रिका की निरंतर प्रगति की कामना करता हूं।

बि. कं. मु.

श्री बिजित कुमार मुखर्जी
प्रधान महालेखाकार एवं प्रधान संरक्षक “धरा गुर्जरी”

वरिष्ठ उप महालेखाकार की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि विभागीय हिंदी ई-पत्रिका "धरा गुर्जरी" के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। जैसा कि विदित है भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है और यही इसकी विशेषता भी है। केन्द्रीय कार्यालयों में हमें संपूर्ण भारत के विविध भाषाभाषी कामिकों के साथ कार्य करने का अवसर मिलता है ऐसे में किसी एक स्थान पर एक भाषा के रूप में सभी को हिंदी पत्रिका के माध्यम से एक सूत्र में पिरोना भी अत्यंत सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य है।

मुझे विश्वास है कि "धरा गुर्जरी" राजभाषा के प्रचार –प्रसार के साथ विभागीय अभिरुचियों और उपलब्धियों को पर्याप्त स्थान देते हुए पत्रिका प्रकाशन की गौरवमय परम्परा को निरंतर बनाए रखेगी।

मैं पत्रिका के प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों/रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ सं.
1.	'महात्मा' ज्योतिबा फुले एक महान समाज सुधारक	श्री सतीश नानाजी वासनिक (व.उपमहालेखाकार /प्रशा.)	लेख	01
2.	शौक़—जीवन की रफ़्तार में ठहराव की ज़रूरत	श्रीमती विकल्पा विश्वकर्मा (उपमहालेखाकार)	लेख	06
3.	अपने अंदर छुपे आत्ममुग्ध (नर्सिसिस्ट/Narcissist) व्यक्ति को कैसे पहचाने ?	श्रीमती बबिता (सहायक निदेशक (राजभाषा)	लेख	08
4.	स्वच्छ विकसित भारतवर्ष बनाना होगा	श्री हेमराज मीना (स.ले.प.अ.)	कविता	15
5.	कार्यशैली और लेखनशैली	सुश्री हेमा प्रजापति (क. हिं.अनुवादक)	लेख	17
6.	पर्यावरण	श्रीमती विद्या अय्यर (पर्यवेक्षक)	लेख	23
7.	न्याय का पहिया	श्री नरेश सिंह (स.ले.प.अ.)	लेख	24
8.	अधूरापन	श्री सिद्धार्थ पाठक (आशुलिपिक वर्ग-II)	कविता	27
9.	गीता सार- कर्म है महान	श्री दिपेश कुमार गुप्ता (व.ले.प.)	लेख	31
10.	बस एक बात है,और कुछ नहीं	श्री चिंटू एम.गुप्ता (व.ले.प.)	कविता	35
11.	माइक्रोप्लास्टिक राक्षस	श्री माचवरम श्रीनिवास राव (स.पर्यवेक्षक)	लेख	36
12.	बदलते दौर का हमारे जीवन पर प्रभाव	श्री हरि सिंह (लेखापरीक्षक)	लेख	42
13.	मुस्कुराहट की ताक़त	श्री अनिल ओड (डी.इ.ओ.)	कविता	46
14.	सोशल मीडिया	श्री बिनय कुमार (लेखापरीक्षक)	लेख	49
15.	अंतिम क्षमा	श्री ऋषभ कुमार मिश्रा (लेखापरीक्षक)	कविता	53
16.	कैसा लगता है ?	श्रीमती विद्या अय्यर (पर्यवेक्षक)	कविता	57

17.	पिताजी	श्री माचवरम श्रीनिवास राव (स.पर्यवेक्षक)	लेख	58
18.	उद्विग्न मन	सुश्री मीनाक्षी कुमारी,बहन (श्री ऋषभ कुमार मिश्रा, लेखापरीक्षक)	कविता	60
19.	आज का अभिमन्यु	श्री सिद्धार्थ पाठक (आशुलिपिक वर्ग-II)	लेख	62
20.	आधुनिक “माँ”	श्री अनिल ओड (डी.इ.ओ.)	लेख	65
21.	बुजुर्ग हमारे घर की जड़े हैं	श्री दिपेश कुमार गुप्ता (व.ले.प.)	लेख	67
22.	बायोमेट्रिक	श्री बिनय कुमार (लेखापरीक्षक)	कविता	69

'महात्मा' ज्योतिबा फुले एक महान समाज सुधारक

श्री सतीश नानाजी वासनिक
व.उपमहालेखाकार

' महात्मा ज्योतिराव फुले' जी की कहानी एक महान समाज सुधारक की कहानी है। इनका जन्म 11 अप्रैल 1827 *खानवाडी, पुणे, ब्रिटिश भारत* (अब महाराष्ट्र में) के सतारा जिले के एक हिंदू माली परिवार में हुआ था। जिन्हें 'ज्योतिबा फुले' जी के नाम से भी जाना जाता है, महाराष्ट्र के एक सामाजिक कार्यकर्ता, व्यवसायी, जाति-विरोधी समाज सुधारक और लेखक थे। जिन्होंने छुआछूत, जातिवाद और लैंगिक भेदभाव के खिलाफ लड़ाई, जिसमें अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था का उन्मूलन और महिलाओं और उत्पीड़ित जाति के लोगों को शिक्षित करने के उनके प्रयास शामिल थे। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया, विधवाओं के लिए आश्रम स्थापित किए और 1873 में सत्यशोधक समाज (सत्य साधकों का समाज) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य वंचितों को शोषण से मुक्त कराना था। महात्मा फुले जी को 1876 में तत्कालीन पूना नगरपालिका का आयुक्त (नगर परिषद सदस्य) नियुक्त किया गया और उन्होंने 1883 तक इस अनिर्वाचित पद पर कार्य किया।

शुरुआती जीवन और शिक्षा:

'ज्योतिबा फुले' जी का जन्म पुणे के एक माली परिवार में हुआ था। तत्कालीन पिछड़ा माली समुदाय शिक्षा को अधिक महत्व नहीं देता था और इस प्रकार प्राथमिक विद्यालय में जाने के बाद, जहाँ उन्होंने पढ़ने, लिखने और अंकगणित की मूल बातें सीखीं, ज्योतिराव को उनके पिता ने स्कूल से निकाल लिया। वह अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अन्य काम करने लगे। फिर 'ज्योतिबा फुले' जी की ही माली जाति के एक व्यक्ति ने फुले की बुद्धिमत्ता को पहचाना और

फुले जी के पिता को उन्हें 1847 में स्थानीय स्कॉटिश मिशन हाई स्कूल में भेजने के लिए सहमत कर लिया जहाँ उन्होंने अपनी अंग्रेजी स्कूली शिक्षा पूरी की।

जातिगत भेदभाव के खिलाफ लड़ने का संकल्प:

उनके जीवन का निर्णायक मोड़ 1848 में आया, जब वे एक उच्चवर्गीय मित्र के विवाह समारोह में शामिल हुए। फुले जी ने पारंपरिक विवाह समारोह में भाग लिया, लेकिन बाद में उनके मित्र के माता-पिता ने उन्हें ऐसा करने के लिए डाँटा और अपमानित किया। उन्होंने उनसे कहा कि शूद्र जाति से होने के नाते उन्हें उस समारोह से दूर रहने की समझदारी दिखानी चाहिए थी। इस घटना ने उन पर गहरा प्रभाव डाला और जाति व्यवस्था में निहित अन्याय के बारे में उनकी समझ को आकार दिया।

अपने एक उच्च-जाति के दोस्त की शादी में मिले अपमानजनक अनुभव के बाद उन्होंने जातिगत भेदभाव के खिलाफ लड़ने का संकल्प लिया, इस घटना ने उन्हें जाति व्यवस्था की बुराइयों का सामना करने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने इस व्यवस्था को चुनौती देने का मन बना लिया।

सावित्रीबाई फुले के साथ शिक्षा में योगदान :

1848 में ही उन्होंने थॉमस पेन की पुस्तक राइट्स ऑफ मैन पढ़ी और सामाजिक न्याय की गहरी समझ विकसित की। उन्होंने महसूस किया कि शोषित जातियां और महिलाएं भारतीय समाज में हाशिए पर थीं, और यह भी कि इन वर्गों की शिक्षा उनकी मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण थी। 'महात्म ज्योतिबा फुले' जी ने सबसे पहले अपनी पत्नी सावित्रीबाई को पढ़ाकर **भारत की पहली महिला शिक्षिका बनाया** और उनको एक स्कूल में प्रशिक्षण के लिए भी भेजा। दोनों दंपति ने मिलकर पुणे में तात्यासाहेब भिड़े के निवास विश्रामबाग वाड़ा में लड़कियों के लिए अपना पहला स्वदेशी रूप से संचालित बालिका विद्यालय स्थापित किया साथ ही शूद्रों व अछूतों के लिए भी स्कूल खोले, परंतु पुणे के रूढ़िवादी उच्च जाति समाज ने उनके काम को मंजूरी नहीं दी, उनके परिवार और

समुदाय को भी उन्हें बहिष्कृत करने के लिए मजबूर किया। इस अवधि के दौरान, उनके दोस्त उस्मान शेख और उनकी बहन फातिमा शेख ने उन्हें आश्रय प्रदान किया। उन्होंने अपने परिसर में स्कूल शुरू करने में भी मदद की। बाद में, तत्कालीन अछूत जातियों के बच्चों के लिए स्कूल शुरू किए। महात्मा ज्योतिबा फुले जी भारत में महिला शिक्षा के अग्रदूत कहे जा सकते है।

समाज सुधार के प्रयास:

उन्होंने अपने घर का कुआँ अछूतों के लिए खोलकर छुआछूत का विरोध किया।

1863 में, पुणे में एक भयावह घटना घटित हुई, काशीबाई नाम की एक उच्चवर्गीय विधवा गर्भवती हो गई जिसके बच्चे को जन्म देने के बाद मार कर एक कुएँ में फेंक दिया गया, इस घटना से फुले बहुत दुखी हुए और मित्र सदाशिव बल्लाल गोवंडे और सावित्रीबाई के साथ मिलकर उन्होंने एक शिशुहत्या निवारण केंद्र शुरू किया। पुणे में इस केंद्र के विज्ञापन वाले पर्चे चिपकाए गए, जिन पर निम्नलिखित शब्द लिखे थे: "विधवाओं, यहाँ आओ और अपने बच्चे को सुरक्षित और गुप्त रूप से जन्म दो। यह तुम्हारे विवेक पर निर्भर है कि तुम बच्चे को केंद्र में रखना चाहती हो या अपने साथ ले जाना चाहती हो। यह अनाथालय [छोड़े गए] बच्चों की देखभाल करेगा।" फुले दंपत्ति ने 1880 के दशक के मध्य तक शिशुहत्या निवारण केंद्र चलाया।

उन्होंने विधवा पुनर्विवाह और विधवाओं के केश कटवाने की प्रथा (विधवा केशवापन) के खिलाफ आंदोलन शुरू किया। विधवाओं के लिए आश्रम स्थापित किए।

उन्होंने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जो ज्ञान और भाईचारे के माध्यम से सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए समर्पित था। सभी धर्मों और जातियों के लोग इस संघ का हिस्सा बन सकते थे जो उत्पीड़ित वर्गों के उत्थान के लिए काम करता था।

लेखन और योगदान:

उन्हें मराठी शब्द दलित (टूटा हुआ, कुचला हुआ) को उन लोगों के लिए एक वर्णनकर्ता के रूप में पेश करने का श्रेय दिया जाता है जो पारंपरिक वर्ण व्यवस्था से बाहर थे।

'महात्मा फुले' जी के कार्यों ने भारत के प्रथम विधि मंत्री और भारतीय संविधान की प्रारूप समिति के प्रमुख, बी.आर. अंबेडकर को प्रेरित किया। अंबेडकर जी ने 'ज्योतिबा फुले' जी को अपने तीन गुरुओं में से एक माना था।

उनकी प्रसिद्ध पुस्तक "गुलामगिरी" ने पश्चिमी और दक्षिण भारत के चिंतन को प्रभावित किया। यह पुस्तक, महिलाओं, जाति और सुधार से संबंधित है, अमेरिका में उन लोगों को समर्पित थी जो गुलामी को समाप्त करने के लिए काम कर रहे थे।

उन्होंने गाँवों में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य करने की वकालत की। उन्होंने उच्च विद्यालयों और महाविद्यालयों में अधिक निचली जातियों के लोगों को लाने के लिए विशेष प्रोत्साहन की भी माँग की।

उन्होंने शिक्षा और सामाजिक न्याय पर जोर देते हुए कई किताबें और लेख लिखे।

'ज्योतिबा फुले' जी ने शोषित जातियों के सदस्यों के लिए अपना घर और अपने पानी के कुएँ का उपयोग खोलकर शोषित जातियों के आसपास के सामाजिक अस्पृश्यता के कलंक को खत्म करने की कोशिश की।

सम्मान :

'ज्योतिबा फुले' जी को 11 मई 1888 को एक विशाल जनसभा में विट्ठलराव कृष्णाजी वांडेकर द्वारा पहली बार 'महात्मा' की उपाधि दी गई थी महात्मा का संस्कृत में अर्थ होता है : "महान आत्मा", "आदरणीय", यह उपाधि उनके सामाजिक कार्यों, विशेषकर जाति-प्रथा और अस्पृश्यता के उन्मूलन, महिलाओं के उत्थान और गरीब और कमजोर वर्गों के लिए न्याय सुनिश्चित करने के प्रयासों के सम्मान में दी गई थी।

फुले की स्मृति में कई इमारतें और स्थान हैं। इनमें शामिल हैं: विधान भवन (महाराष्ट्र राज्य विधानसभा भवन) के परिसर में पूर्ण लंबाई वाली प्रतिमा,'महात्मा ज्योतिबा फुले' जी मंडी,मुंबई, जिसे पहले क्रॉफर्ड मार्केट के नाम से जाना जाता था, पुणे में 'महात्मा फुले' जी संग्रहालय, 'महात्मा फुले' जी कृषि विद्यापीठ (कृषि विश्वविद्यालय), राहुरी, अहमदनगर जिला , महाराष्ट्र, 'महात्मा ज्योतिबा फुले' जी रोहिलखंड विश्वविद्यालय इत्यादि।

भारतीय डाक विभाग ने फुले जी के सम्मान में वर्ष 1977 में एक डाक टिकट जारी किया था।

निधन:

'महात्मा ज्योतिबा फुले' जी का निधन **28 नवंबर 1890** को पुणे में हुआ था। उनका निधन 63 वर्ष की आयु में हुआ था।

'महात्मा **फुले' जी ने मानव कल्याण, महिला शिक्षा, एकता, समानता और आसान धामिक सिद्धांतों और अनुष्ठानों के आदर्शों के साथ सत्यशोधक समाज की स्थापना कर अपने आप को** सावित्रीबाई फुले जी के साथ **इतिहास में हमेशा के लिए एक महानदूरदर्शी सुधारक के रूप में अमर कर लिया। '**महात्मा **ज्योतिबा फुले' जी एक सच्चे युग प्रवर्तक थे।**

शौक़—जीवन की रफ़्तार में ठहराव की ज़रूरत

श्रीमती विकल्पा विश्वकर्मा
उपमहालेखाकार

तेज़ भागती ज़िंदगी, प्रतिस्पर्धा का दबाव, हर दिन का प्रदर्शन और उस पर कामयाबी का निरंतर चक्र—इन सबसे आज का इंसान थका-हारा, उलझा और बेचैन नज़र आता है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, यह दबाव और भी गहराता जाता है। काम में दक्षता और पेशेवर विकास निस्संदेह ज़रूरी हैं, पर क्या जीवन केवल इन्हीं तक सीमित है?

"ज़िंदगी की असल मिठास,
ठहराव में है, न कि बस भाग-दौड़ में।"

पुराने समय में कहा जाता था *"नेकी कर, दरिया में डाल।"* अच्छे कामों को बताने की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। लेकिन आज सोशल मीडिया के दौर में मानो हर अच्छाई को प्रमाणित करना ज़रूरी हो गया है। लोग यह जताने लगे हैं कि वे कितने अच्छे, कितने मददगार और कितने सफल हैं। इसमें प्रेरणा देने का लाभ भी है—दूसरे लोग आगे बढ़कर योगदान करना चाहते हैं। मगर इस प्रक्रिया में हमने वह शांति, वह सन्नाटा और वह आत्मिक सुकून खो दिया है, जो केवल अपने लिए, बिना दिखावे के, कुछ करने से मिलता है।

यही वह स्थान है जहाँ *शौक़* हमारी ज़िंदगी में प्रवेश करते हैं। बागवानी, पेंटिंग, बुनाई, सिलाई, घर की साज-संभाल, पालतू पशुओं से खेलना या व्यायाम—ये सब शौक़ हमें उस शांत कोने तक पहुँचाते हैं, जहाँ हम केवल अपने लिए जीते हैं।

शौक़ केवल समय काटने का साधन नहीं हैं। ये ऊर्जा के बैंक हैं—जहाँ हम दिनभर की थकान को जमा कर, नई ताज़गी प्राप्त करते हैं। यह धीमी जीवनशैली (*slow*

living) न केवल हमारी मानसिक सेहत को सँभालती है, बल्कि हमें सजग और जीवंत भी बनाए रखती है।

दफ़्तर का तनाव, ज़िम्मेदारियों का बोझ, और लगातार बढ़ती अपेक्षाएँ—इन सबके बीच शौक़ हमें यह याद दिलाते हैं कि हम केवल मशीन नहीं, बल्कि संवेदनशील इंसान हैं।

"**काम से पहचान मिलती है,**
पर शौक़ से आत्मा मुस्कुराती है।"

पेशेवर विकास जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही ज़रूरी है आत्मिक संतुलन। जब हम बिना किसी उद्देश्य या दिखावे के, केवल आनंद के लिए कुछ करते हैं—तभी हम जीवन के सच्चे अर्थ को छूते हैं।

इसलिए, ज़रूरी है कि हम अपने भीतर वह शांत जगह बनाएँ, जहाँ केवल शौक़ का संगीत गूंजे। शायद तभी हम यह कह पाएँगे—

"**दौड़ती दुनिया के बीच,**
मैंने अपने लिए एक कोना रखा है,
जहाँ न कोई पुरस्कार चाहिए,
न कोई ताली—
बस दिल की ख़ुशी ही काफी है।"

अपने अंदर छुपे आत्ममुग्ध (नर्सिसिस्ट/Narcissist) व्यक्ति को कैसे पहचाने ?

श्रीमती बबिता
सहायक निदेशक (राजभाषा)

1. **"हर बात में सिर्फ तुम ही सही हो।"**
   - तुम सर्व हो,सर्वस्व हो –भूगोल,इतिहास,अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे, जीव विज्ञान,रिलेशनशिप .... हर विषय के ज्ञानी बस तुम ही हो !
   - दूसरों को बोलने का मौका ही नहीं देना है क्योंकि तुम्हें तो सब पता होता है –भले ही न पता हो, फिर भी विशेषज्ञ (एक्सपर्ट) जैसी एक्टिंग करना नहीं भूलते !
   - हर बातचीत में तुम्हें सिर्फ अपनी राय ही परम सत्य लगती है।
2. **"हर रिश्ते में dominate करने की चाह !"**
   - तुम्हें हर रिश्ते में नियंत्रण चाहिए – दोस्ती में,परिवार में,रिश्तों में। दुसरे लोग तुम्हारे हिसाब से behave करें,वरना तुम्हें खलने लगता है। अगर तुम्हारा मूड खराब हो,तो चाहते हो कि सामने वाला भी दुःखी हो – "मैं परेशान हूं ,तो तुम भी क्यों हंस रहो है ?"
   - तुम अक्सर दूसरों पर हावी रहने की कोशिश करते हो, क्योंकि तुन्हें लगता है कि हर रिश्ता तुम्हारी शर्तों –तुम्हारे हिसाब से ही चले।
3. **"हमेशा दिखावा करना !"**
   - तुम्हें हर बातचीत में अपनी उपलब्धियों, संपत्ति या काबिलियत का जिक्र करने की आदत है – ताकि लोग तुमसे प्रभावित रहें। चाहे बात मौसम की हो या सिनेमा/मूवी की, तुम हर दूसरी बात में खुद को घुसा ही देते हो- तुम क्या ही पहाड़ घूमे,घूमने तो मैं गया था अकेला बाइक पर लद्दाख, आदि!

- हर चीज में अपनी greatness का promotion करना होता है।

4. **“हमेशा तारीफ़ सुनने की चाह रखना ! ”**
    - तुम्हें चाहिए लोग- तुम्हारे काम की,व्यक्तित्व की ,कपड़ों की,यहाँ तक कि तुम्हारी मुस्कान को भी नोटिस करें और compliment दें।
    - अगर कोई भी तुम्हारी तारीफ़ न करे, तो तुम्हें अजीब सा लगने लगता है।
    - दूसरी तरफ जब किसी और की प्रशंसा हो रही हो ,तब तुम्हारा मूड अचानक खराब हो जाता है – अरे,इसमें ऐसा क्या खास है ?
    - तुम्हें हर रोज validation की डोज़ चाहिए होती है, तो समझो कि तुम्हारे अंदर का Narcissist लाइक्स और तारीफ पर ही जिंदा है।

5. **“आलोचना या फीडबैक न सहन कर पाना !”**
    - अगर कोई दोस्त हल्के-फुल्के अंदाज में कह दे-”यार,तेरी टी-शर्ट का रंग थोड़ा अजीब है ,”तो तुम सोचने लगते हो–“ये तो जल रहा है मुझसे !” वही बात फिर दिन भर दिमाग में घुमती भी रहती है “कि,उसने ऐसा क्यों बोला? हर छोटी –मोटी टिप्पणी आप मूड को खराब कर देती है। आलोचना को आप बेइज्जती मानकर दिनभर उसका रोना रोते रहते हो।

6. **<u>“दिखावा करने की आदत !”</u>**
    - अगर तुम ब्रेड लेने भी Fortuner की चाभी लेकर जाते हो ,तो सच मानो – तुम्हारे अंदर का चौधरी साहब बस राशन वाले,सब्जीवाले और छोटी-मोटी दुकान वालों पर रौब जमाने निकला है। छोटी –मोटी बातों में भी अपने रुतबे का प्रदर्शन जरुरी है-ताकि दुनिया देखे कि तुम खास हो। तुम्हें हर मौके पर अपने लाइफस्टाइल या स्टेटस का दिखावा करने की लत लग चुकी है।

7. **“अपनी गलती कभी ना मानना!”**
    - अगर तुम सामने चलती गाड़ी से टकरा जाओ,तो अपनी गलती मानने के बजाय उल्टा सामने वाले पर चढ़ बैठते हो – भाई,ये रोड़ धीरे गाड़ी चलाने के लिए बना है क्या?” तुम्हे कभी यह स्वीकार ही नहीं होता कि तुम्हारी गलती थी। जब अपनी

गलती मानने के बजाय तुम Gaslighting करके सामने वाले को ही गलत साबित करने लगते हो, "उल्टा चोर कोतवाल को डांटे" वाला मुहावरा सुना है ना?

8. **"सिर्फ अपने Struggles को खास मानना!"**

- तुम्हें हमेशा लगता है कि बस तुम्हारा संघर्ष ही असली और दिलचस्प है- बाकि सबकी कहानियां औसत हैं । कोई अगर अपने संघर्ष का जिक्र करे ,तो तुम अपनी कहानी सुनना शुरू कर देते हो –" संघर्ष तो दोस्त मैंने किया है ...बिना AC के सोते थे हम लोग, घर में सिर्फ एक कार हुआ करती थी –सोच,वहां से सफ़र शुरू किया था !"

9. **"हर किसी को अपना Competitor समझना!"**

- तुम्हें अक्सर लगता है कि तुम्हारे आस –पास के ज्यादातर लोग तुमसे प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं-चाहे वो तुम्हारा बॉस हो,सहकर्मी हो,पड़ोसी हो या दोस्त। कोई तरक्की करे तो तुमें लगता है–"ये मुझे पीछे छोड़ने की कोशिश कर रहा है।"
- और तुम्हारा ये पक्का यकीन होता है कि दुनिया ने तुम्हारा सिर्फ फायदा उठाया है –वरना तुम अब तक Elon Musk से पहले मंगल ग्रह पर अपना personal यान भेज चुके होते !
- तुम्हें हर रिश्ते में कॉम्पिटिशन और चालाकी ही दिखती है।

10. **"हर बात पर Insecure रहना !"**

- तुम्हें अक्सर दूसरों की खुशियाँ और कामयाबी खुद से बड़ी लगती है। अगर कोई दोस्त सोशल मीडिया पर घूमता दिख जाए ,तो तुम्हें अपनी लाइफ फीकी लगने लगती है –"यार ये फिर घुमने चला गया.... और मैं यही पड़ा हुआ हूं !" दूसरों की तरक्की/उपलब्धियां हज़म नहीं होती। "इसने तो बस किस्मत से पा लिया.... दूसरों की खुशी तुम्हें बेचैन कर देती है।

11. **"सोशल मीडिया पर अपनों शक्ल की ही बारिश!"**

- अगर तुम्हारी इंस्टा फीड में हर दूसरी फोटो तुम्हारी ही सेल्फी हो और कैप्शन में लिखा हो –"just a random click" फिर बैठ कर ये भी देखते हो किस किस ने लाइक किया है किस ने नहीं ...पहाड़ घूमने जाओ,लेकिन वहां की खूबसूरती दिखाने के बजाय अपनी ही 25 पोज़ वाली फोटो डाल देते हो- पहाड़ तो बस बैकग्राउंड में हैं... असली नज़ारा तो मैं हूँ।

12. <u>“दिखावे के लिए जीना!”</u>

- अगर तुम पार्क में दौड़ने भी सिर्फ इसीलिए जाते हो ताकि स्टोरी डाल सको- “Grind never stops!” तो सच मानो,तुम्हे दौड़ने से ज्यादा पसीने वाली सेल्फी पोस्ट करने की जल्दी रहती है! तुम फिटनेस महसूस करने से ज्यादा दिखाने में यकीन करते हो- “देखो, मैं कितना disciplined और motivated हूँ!” हक़ीकत ये भी है कि तुम्हारी फिटनेस सिर्फ सोशल मीडिया पर दिखती है –असल में नहीं! तुम्हारी रियल लाइफ और पर्सनालिटी में ज़मीन आसमान का फर्क है।

याद रखना सभी में सारे पॉइंट्स नहीं होते! कई बार Narcissism की बस हल्की झलकियां ही दिखाई देती हैं –थोड़ी self-love अच्छी है,कॉन्फिडेंस भी जरुरी है ,लेकिन इतना नहीं कि “मैं “ के अलावा कुछ दिखाई ही न दे! अगर तुम्हारा मूड सिर्फ इस बात पर खराब होने लगे कि- “किसने लाइक नहीं किया ?” या “किसने तारीफ नहीं की ?” तो दिक्कत वाली बात है। थोड़ी self-love अच्छी है, लेकिन “मैं” के अलावा भी दुनिया है! यूँही आईना देखते रहने की आवश्यकता है ताकि हमें “मैं “ की हवा ना लगे।

<u>संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2025</u>

प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2025 का शुभारंभ किया गया

संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2025 के शुभारंभ पर व. उपमहालेखाकार महोदय द्वारा माननीय गृहमंत्री जी का संदेश पठन

महानिदेशक महोदय पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए

व. उपमहाललेखाकार महोदय पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए

कार्यालय के कार्मिकों द्वारा एक बेहद मनोरंजक लघु नाटक का मंचन किया गया

सभी कलाकारो द्वारा उत्कृष्ट अभिनय प्रस्तुत किया गया

स्वच्छ विकसित भारतवर्ष बनाना होगा

श्री हेमराज मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ऐसा था भारतवर्ष हमारा जहाँ दूध-दही की नदियां बहती थी
हर घर में सुन्दर गायें रहती थी
बाघ-बघेरों के लिए बनाये है, हमने अभ्यारण्य
सड़कों पर दर-दर भटकती गायों को गोशाला में बंद किया
हो शहर -शहर में गाय अभ्यारण्य ऐसा ये हिंदुस्तान बने

गाय युक्त हो ये राष्ट्र हमारा, ऐसा भारतवर्ष बनाना होगा।
विकसित भारत नहीं, स्वच्छ विकसित भारतवर्ष बनाना होगा॥

शहर-शहर और गाँव-गाँव खुले शराबी ठेकों ने, हिंदुस्तान को तबाह
कियाभटक रहा है युवा मार्ग से,जीवन अपना बर्बाद कियाउजड़ रहे
परिवार नशे से, शिक्षा, स्वास्थ सब बेकार हुआ
अब समय आ गया पाबंदी का, ऐसा ये भारतवर्ष बने

शराब मुक्त हो ये राष्ट्र हमारा,ऐसा भारतवर्ष बनाना होगा।
विकसित भारत नहीं, स्वच्छ विकसित भारतवर्ष बनाना होगा॥
किसी को गाडी, किसी को बंगला, किसी को चाहिए, आलीशान भवन
भ्रष्टाचार की जड़े है गहरी कैसे हो हिन्दुस्तान चमन
बढ़ रही है रिश्वत खोरी कैसे विकसित राष्ट्र बने
जब तक रिश्वत मिले नहीं कैसे आगे बात बने

21वीं सदी का भारत है, भ्रष्टाचार मुक्त भारतवर्ष बनाना होगा।
विकसित भारत नहीं, स्वच्छ विकसित भारतवर्ष बनाना होगा॥

गुटखा, तम्बाकू, पान-मसाला मिलता है हर रोज यहाँ
हर कोई लगा है चबाने इन्हें, सारा हिन्दुस्ता बर्बाद हुआ
पनपी है बीमारी इनसे, क्यों ये देश में बिकने लगा

छोड़ स्वास्थ्य को चीजो को, हर कोई इन्हें जेब में रखने लगा

नशा मुक्त हो ये राष्ट्र हमारा, ऐसा भारतवर्ष बनाना होगा।

विकसित भारत नहीं, स्वच्छ विकसित भारतवर्ष बनाना होगा॥

बदला है खान -पान यहाँ का, परिधानों की तो बात कहाँ
बढ़ रही है विदेशी संस्कृति, भारतीय संस्कृति कमजोर हुई
छोड़ विदेशी बातों को हम अपने राष्ट्र की बात करें
हो राष्ट्र हमारा स्वदेशी, ऐसा ये भारतवर्ष बनें

सत्य अहिंसा फिर से आये, ऐसा भारतवर्ष बनाना होगा।

विकसित भारत नहीं, स्वच्छ विकसित भारतवर्ष बनाना होगा॥

कार्यशैली और लेखनशैली

सुश्री हेमा प्रजापति
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

किसी भी व्यक्ति को पहचान दिलाने वाली दो अदृश्य परंतु प्रभावशाली शक्तियां होती हैं – उसकी कार्यशैली और उसकी लेखनशैली । एक उसके कार्य क्षेत्र में उसकी पहचान बनाती है , तो दूसरी उसकी सोच, भावनाओं और अनुभवों को शब्दों के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाती है। दोनों ही शैली न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व की झलक देती हैं, अपितु यह भी दर्शाती हैं कि व्यक्ति अपने विचारों को कैसे कार्य में बदलता है और कार्य को कैसे प्रभावशाली बनाता है।

किसी भी व्यक्ति की पहचान केवल उसके विचारों या शब्दों से नहीं होती, बल्कि उन विचारों को क्रियान्वित करने के तरीके से भी होती है। यही तरीका जब कार्य में प्रकट होता है तो उसे कार्यशैली कहते हैं, और जब विचार लेखन में उतरते हैं तो वह लेखनशैली कहलाती है। दोनों ही किसी के व्यक्तित्व की गहराई, सोच की स्पष्टता और रचनात्मकता के प्रतिबिंब होते हैं। कार्यशैली जहाँ हमारी दिनचर्या, निर्णय और संगठन में झलकती है, वहीं लेखनशैली हमारी भाषा, अभिव्यक्ति और दृष्टिकोण की साक्षी बनती है।

कार्यशैली का अर्थ केवल कार्य करना ही नहीं होता बल्कि किसी व्यक्ति के व्यक्तिव के प्रतिबिंब को भी दर्शाता है। कार्यशैली का अर्थ किसी व्यक्ति का कार्य करने का तरीका, उसकी प्राथमिकताएं, उसकी योजनाएं, समय प्रबंधन और ज़िम्मेदारी उठाने का भाव होता है। यह शैली इस बात को परिभाषित करती है कि हम हमारे सामने आयी किसी भी समस्या को किस प्रकार सुलझाते हैं, हम निर्णय कैसे लेते हैं और किस प्रकार टीम में रहकर कैसे सबसे संवाद करते हैं।

व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में हमारी कार्यशैली ही यह निर्धारित करती है कि हम सफल होंगे या नहीं। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक की कार्यशैली में यदि समय पर कक्षा लेना, विद्यार्थियों को समझना और उन्हें

आत्मविश्वास देना शामिल है, तो वह न केवल एक कुशल शिक्षक होगा बल्कि प्रेरणादायक भी। इसके अतिरिक्त कार्यशैली के विभिन्न रूप हम देख सकते हैं, जैसे जहाँ हर कार्य को करने से पूर्व उसके लिए एक योजना निर्धारित की जाती है, उसे योजना आधारित कार्यशैली कहा जाता है। जहाँ हर कार्य को करने में नवीनता एवं रचनात्मकता प्रदर्शित की जाती है उसे सृजनात्मक कार्यशैली कहा जाता हैं। जहाँ समयबद्धता और गति प्रमुख होती है, उसे तेज़-गति कार्यशैली कहा जाता है। तथा जहाँ सहयोग और सामूहिक निर्णय पर बल दिया जाता है, उसे टीम-आधारित कार्यशैली कहा जाता है। किसी की कार्यशैली देखकर यह समझा जा सकता है कि वह सफलता को लक्ष्य मानता है या प्रक्रिया को।

लेखनशैली मौन विचारों की मुखर अभिव्यक्ति को कहा जा सकता है। जब विचारों को शब्द मिलते हैं और भावनाएं भाषा में ढलती हैं, तब लेखनशैली जन्म लेती है। यह केवल लेखन का ढांचा या शैली नहीं होती, बल्कि इसमें लेखक की आत्मा, संवेदना और दृष्टिकोण समाहित होता हैं।

लेखन केवल जानकारी देना नहीं है, यह एक कला है जो शब्दों के माध्यम से सोच, अनुभव, संवेदना और दृष्टिकोण को पाठक के मन तक पहुँचाती है। लेखनशैली एक लेखक की पहचान होती है। कोई शैली भावनात्मक होती है, कोई तार्किक; कोई विश्लेषणात्मक, तो कोई कल्पनाशील। लेखनशैली इस बात पर भी निर्भर करती है कि लेखक किस प्रकार की भाषा, वाक्य-संरचना और उदाहरणों का प्रयोग करता है और अपने लेखन को किस प्रकार शब्दों का चयन कर प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करता है। एक सफल लेखक वह होता है जिसकी लेखनशैली पाठक के हृदय तक पहुचे, उनके मन में जिज्ञासा पैदा करे और पढ़ने के उपरांत उनके मन में छाप छोड़ दे।

यदि हम लेखनशैली के विभिन्न रूपों की बात करें तो आदेशात्मक लेखन जो स्पष्ट, सटीक और तात्कालिक होता है। जिसमें चित्रों की तरह भावनाएं शब्दों में उतरती हैं उसे वर्णात्मक लेखन कहा जाता है। तर्क, विश्लेषण और दृष्टिकोण से परिपूर्ण विचारात्मक लेखन होता है तथा जहाँ शब्द नहीं संवेदनाएं बोलती है उसे भावनात्मक लेखन कहा जाता है। लेखनशैली न केवल लेखक की शिक्षा,

संस्कृति और रुचियों का प्रतीक होती है, बल्कि उसकी सोच और दृष्टिकोण को भी प्रतिबिंबित करती है। यही कारण है कि एक ही विषय पर अलग-अलग लेखक अलग भावनाओं और प्रभावों के साथ लिखते हैं।

यदि हम इन दोनों में समानता की बात करें तो दोनों ही व्यक्तित्व का प्रतिबिंब हैं । जिस प्रकार कार्यशैली किसी भी काम में अनुशासन, समयबद्धता और नयापन लाती है, उसी प्रकार लेखनशैली भाषा में स्पष्टता, सुंदरता और विचारों की गहराई लाती है । दोनों ही संवाद के साधन हैं कार्यशैली कर्म के माध्यम से संवाद करती है और लेखनशैली शब्दों से संवाद करती है । दोनों शैलियां निरंतर सुधार, अनुभव, अभ्यास और आत्मचिंतन से निखरती हैं । यदि कोई अधिकारी अपनी कार्यशैली में दक्ष है और साथ ही अपनी बात प्रभावी ढंग से लिखकर व्यक्त करता है तो उसकी लेखनशैली भी उसकी कार्यकुशलता को बढाती हैं।

वर्तमान परिपेक्ष्य में इन शैलियों का महत्त्व और भी बढ़ जाता है । आज का युग प्रतिस्पर्धा, प्रस्तुतीकरण और प्रभाव का है। केवल कार्य कर लेना या लेख लिख देना पर्याप्त नहीं है, कैसे किया और कैसे लिखा गया, यही ज़्यादा महत्त्व रखता है। कार्यशैली में दक्षता और लेखनशैली में स्पष्टता – यह दोनों सफ़लता की कुंजी बन गई हैं

कार्यालय में आपकी कार्यशैली आपकी ज़िम्मेदारी और नेतृत्व को दर्शाती है, वही पत्र व्यवहार, रिपोर्ट लेखन या सोशल मिडिया में आपकी लेखनशैली आपकी सोच को विश्वसनीयता देती है। कई बार व्यक्ति जैसा काम करता है, वैसा ही वह लिखता है। यदि कार्य में सजगता है, तो लेखन में भी स्पष्टता होती है। यदि व्यक्ति का कार्य नपा-तुला और योजनाबद्ध है, तो उसके लेखन में भी तार्किक अनुक्रम और संतुलन मिलेगा। एक लेखक की लेखनशैली से ही यह जाना जा सकता है कि वह विचारों में कितना परिपक्व, भावनाओं में कितना संवेदनशील और समाज के प्रति कितना सजग है। उसी प्रकार, एक कर्मठ व्यक्ति की कार्यशैली से यह समझा जा सकता है कि वह जीवन के प्रति कितना समर्पित और आत्मानुशासित है

अंत में दोनों ही कार्यशैली और लेखनशैली हमारे जीवन में सफलता के लिए आवश्यक आधार है। कार्यशैली हमें कर्मशील बनाती है, जबकि लेखनशैली हमारे विचारों को आकार देती है। एक संगठित कार्यशैली के बिना उत्कृष्ट लेखन संभव नहीं, और उत्कृष्ट लेखन के बिना संगठित कार्य व्यर्थ हो सकता है। लेखनशैली और कार्यशैली, दोनों ही जीवन के दो ऐसे स्तंभ हैं, जिन पर हमारे व्यक्तित्व की इमारत खड़ी होती है। एक से सोच को दिशा मिलती है, तो दूसरे से जीवन को आकार। जब दोनों में संतुलन होता है, तब मनुष्य न केवल स्वयं को बेहतर बनाता है, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन भी लाता है।

यह दोनों ही हमारे व्यक्तित्व का प्रतिबिंब हैं। यदि हम इनका निरंतर अभ्यास करें, आत्ममंथन करें और समय के साथ अपने भीतर सुधार लाएँ, तो हम न केवल अपने कार्यक्षेत्र में बल्कि समाज में भी एक प्रभावशाली छवि बना सकते हैं।

ओणम के अवसर पर सम्मलित सभी अधिकारी एवं कर्मचारी

महानिदेशक एवं प्रधान महालेखाकार महोदय ओणम के अवसर पर द्वीप प्रज्ज्वलित करते हुए

उपमहालेखकारों संग पारंपरिक परिधान मे कार्यालय की महिला कार्मिक

प्रधान महालेखाकार महोदय संग अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण

ओणम के अवसर पर पारंपरिक भोजन का आनंद लेते हुए कार्यालय के कार्मिक

पर्यावरण

श्रीमती विद्या. वी. नायर
पर्यवेक्षक

पर्यावरण शब्द का अर्थ है हमारे आसपास का वातावरण 'परिवेश' जिसमें सजीव और निर्जीव शामिल है, जो हमारे जीवन को प्रभावित करता है।
पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है पहला 'परि' जिसका अर्थ हैं चारों ओर और दूसरा 'आवरण' जिसका अर्थ है कवच। पर्यावरण के प्रमुख घटक है... वायुमंडल, जलमंडल और स्थलमंडल। पर्यावरण है तो जीवन है। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। ये पर्यावरण को बचाने का एक प्रयास है, पहले के समय में पर्यावरण बहुत स्वच्छ था, पिछले कई सालों से मनुष्य ने पर्यावरण को बहुत दूषित कर दिया है। मनुष्य को बुरी आदतों के परिणामस्वरूप दिन-प्रतिदिन पर्यावरण बिगड़ता ही जा रहा है। जैसे कि पानी का दुरूपयोग, बड़ी-बड़ी इमारतों के निर्माण के लिए वृक्षों की भारी मात्रा में कटौती, बढ़ती जनसंख्या, वाहनों से निकलता धुआं, रासायनिक अपशिष्ट के कारण जल, हवा, ज़मीन सब प्रदूषित होते हैं।

प्रदूषित पर्यावरण के परिणाम मनुष्य को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है, मनुष्य कई बीमारियों का शिकार बन रहा है जिसमे सबसे खतरनाक है कैंसर। भविष्य में जीवन को बचाने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सख्त कदम उठाने होंगें।

पृथ्वी पर निवास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह पर्यावरण की सुरक्षा करें। हमारी अग्रिमता है पर्यावरण की सुरक्षा, नए वृक्षों को बढावा, प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग। सरकार भी पर्यावरण को बचाने के लिए अग्रिमता दे रही है। अब ये एक ही उपाय है कि हम सब मिलकर पर्यावरण को बचाने का सुरक्षित रखने का अभियान शुरू करें यही मेरा सन्देश है।

न्याय का पहिया

श्री नरेश सिंह
स.ले. प. अ.

अक्सर हमने देखा है कि बुरा करने वालों का बुरा होता है लेकिन यह जरुरी नहीं कि वह आपके सामने हो या आपको दिखाई दे इतिहास गवाह है चाहे आदि काल की रामायण का उदाहरण हो या महाभारत का, आधुनिक युग की शक्तिशाली राजनीतिक शख्सियत हो या अन्य क्षेत्र से जुड़ी शख्सियत | ऐसे उदाहरण हमने बहुत देखें हैं या सुने हैं | रोजमर्रा की जिन्दगी में भी कई बार ऐसे उदाहरण सुने होंगे या देखे होंगे | लेकिन बुरा करने वालों ने इनसे कुछ नहीं सीखा और अपने आपको बड़ा होशियार समझा | उन्होंने ये मान कर अपने बुरे कृत्यों को जारी रखा कि उनकी योजना बेहतर है और वे ज्यादा शातिर भी हैं | देर ही सही बड़े से बड़ा शातिर भी या तो वह पकड़ा जाता है और जेल की सलाखों के पीछे होता है या बेमौत मारा जाता है | यह सत्य है कि न्याय का पहिया अपने नीचे बड़े से बड़े को भी दबोच लेता है |

मैं यहाँ शातिर शख्स की कहानी बताना चाहता हूँ जो आदतन एक चोर था | वह बहुत शातिर था | कई चोरियों के बाद भी किसी से न पकड़े जाने का उसमे घमण्ड भी था और उसे खुद पर नाज़ भी था | अक्सर वह हाथ साफ़ करने में माहिर था | गाँव और आसपास के इलाकों में उसने काफी हाथ साफ किया था | उसके पास बहुत सारा धन इकट्ठा हो गया लेकिन लोगों को नहीं पता था कि उसका धन कहाँ है ? एक-दो बार उसे पकड़ कर सच उगलवाने की कोशिश भी की गई लेकिन उससे कुछ भी नहीं उगलवा सके | गाँव वालों ने उसे रंगे हाथों पकड़ने की कोशिश शुरू कर दी | निरन्तर प्रयासों से भी उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी |

राजा तक भी उसकी चोरी के कारनामों की खबर पहुँची | राजा ने जाल बिछा कर उसे रंगे हाथों पकड़ने का आदेश दिया | इस बात का अंदाज़ा उस चोर को भी था | अतः उसने वह गाँव छोड़ने का फैसला किया और जंगल की ओर चल दिया | बहुत दूर अन्दर तक जंगल में जाने के बाद उसे एक कुटिया दिखाई दी | थके हारे चोर ने उस कुटिया में अपना ठिकाना बनाने की सोची | जब वह उस कुटिया के पास गया तब वहाँ पर उसे एक वृद्ध साधु दिखाई दिया | उसने सोचा अब साधु के पास रह कर ही कुछ समय निकाल लेता हूँ | उसने साधु को नमन किया और आश्रय के लिए निवेदन किया | साधु ने उसे देखा और अपनी गर्दन हिलाते हुए उसे आश्रय देने की हामी भर दी |

कुछ समय बीत गया | चोर अपनी आदत से मजबूर उस कुटिया में भी इधर-उधर देखता रहता था | एक दिन उसने देखा कि कुटिया में कुछ बहुमूल्य भेंट रखी हुई हैं और उसने विचार किया शायद आसपास के अमीर लोगों ने इस साधु को श्रद्धापूर्वक दी होंगी | साधु अक्सर अपनी भेंटों में मिले सामान को उनके पास आने वाले सज्जन/जरुरतमंद लोगों में बांट देते थे | लेकिन अब काफी दिनों से कोई नहीं आया था | चोर के मन में विचार आया कि इस साधु को इन सभी बहुमूल्य भेंट की क्या जरुरत है ? क्यों न मैं इन पर हाथ साफ करके बाज़ार में बेच दूँ और जीवन भर आराम से रहूँ | फिर उसके मन में ख्याल आया कि मुझे कुछ दिन और इस कुटिया में गुजारने चाहिए | कुछ दिन और रहने के बाद उसने कुछ और भेंट को देखा और उसका मन अब अपनी योजना को अंजाम देने को कहने लगा | एक दिन जब साधु सो रहे थे तब उसने उन सभी भेंटों को समेटना शुरू कर दिया | वह मन ही मन बहुत खुश था कि साधु सो रहे हैं और जब तक वह उठेगा तब तक वह यहाँ से दूर जा चुका होगा | उसने सभी सामान को समेटा और कुटिया से बाहर निकलने लगा | साधु नींद से उठे और उसने उसे रोक लिया | चोर ने घबराकर बहाने बनाने शुरू कर दिए | साधु ने उसे कुटिया के एक कोनें में और भी भेंट के बारे में बताया और उन्हें भी ले जाने को कहा | वह चक्कर में पड़ गया कि साधु ऐसा क्यों कह रहा है ? लेकिन उसने बिना समय बर्बाद किए हुए वे सभी भेंट भी ले ली और वहाँ से चल दिया | वह बहुत खुश था क्योंकि जिन्दगी में उसकी यह सबसे बड़ी चोरी थी |

वह जंगल से गुजर रहा था तभी मौसम ने करवट बदल ली | मौसम को बिगड़ते देख चोर ने आगे बढ़ने का इरादा छोड़ वापिस कुटिया में जाना बेहतर समझा | जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ से कुटिया गायब थी | उसे समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी जल्दी कुटिया और साधु वहाँ से गायब कैसे हो गए ? उसके पास अब कोई चारा न था | वह मन ही मन सोचने लगा कि अब क्या किया जाए ? तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी | उस आवाज़ में उसे चोर कहकर पुकारा जा रहा था लेकिन वह इसे नकार रहा था | जब वह चोर नहीं माना तब उस आवाज़ ने उसकी एक - एक चोरी गिनवाकर उसे बताई | उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उन सभी चोरी की जानकारी यह आवाज़ बता रही थी | उसे घबराहट के साथ-साथ अपने किए पर पछतावा हो रहा था | वह क्षमा माँगने लगा | लेकिन आवाज़ ने उसे माफ़ करने से मना कर दिया लेकिन कहावत है कि अब पछतावे होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत | तभी उस आवाज़ ने उसे जिन्दगी में की गई सभी चोरी का सारा सामान वापिस करने को कहा और राजा के सामने चोरी की बात कबूल करते हुए दंड सहने को भी कहा | ऐसे कुछ देर तक संवाद होता रहा और आख़िर में उसने राजा के सामने अपनी गुनाह की बात कबूलने का वचन दिया

| थोड़ी देर में वह कुटिया और साधु उसके सामने थे | उस तपस्वी साधु ने अपनी विद्या से चोर को सबक सिखाने की यह तरकीब निकाली थी | साधु के तपस्वी और अंतर्यामी होने के कारण ही अमीर लोग उसे कीमती भेंट देते थे लेकिन उसके लिए ये सब मूल्यहीन थी | उसे यह भी ज्ञान था कि यह चोर राजा के दरबार में नहीं जाएगा | अतः उसने राजा को सन्देश देकर सिपाहियों को वहीँ बुलाया और उस चोर को सुपुर्द कर दिया | चोर ने अपना रंग बदलते हुए सिपाहियों से कहा कि साधु ने खुद ही भेंटों के बारे में बताते हुए उसे ले जाने के लिए कहा | राजा के सिपाहियों ने उसकी एक नहीं सुनी और उसे ले गए | बाद में उससे सभी सामान की जब्ती की गई और उसे कड़ी सज़ा भी दी गई | बड़े से बड़े चोर की भी होशियारी कुछ काम न आई | अब न्याय का पहिया इस शातिर चोर को दबौचे हुए था और कल किसी और के इंतज़ार में था |

अधूरापन

श्री सिद्धार्थ पाठक
आशुलिपिक

चलो आज एक अधूरी सी बात करें,
कि पूरी न होगी ये याद रहे
अधूरा है नाम चलते जाने का
अभी बाकी है सफ़र कुछ कर दिखाने का
क्या हर अधूरापन एक सजा
नहीं इसका भी खुद एक अपना मजा है
अधुरा है सूरज पूरे दिन चलता है
पर कहाँ कभी वो चाँद से मिलता है
एक नदी जो सालों से बहती आ रही है
न रुकी, न थमी, बस चली जा रही है
सोचे वो पूरा होने को जिस दिन
क्या नदी रहेगी वो उस दिन
न रहे शोक कि कुछ पूरा न हुआ
करें शुक्र कि, शुरु तो हुआ
तो क्यूँ न इस कविता को एक नया मोड़ दे
हो सकती है पूरी पर अधूरा छोड़ दें
माना कि पूरी नहीं ये, इसी दिन
पर फिर उठेगी पूरा होने, किसी दिन,
अधूरा है नाम चलते जाने का
अभी बाकी है सफ़र कुछ कर दिखाने का ।

स्वतंत्रता दिवस समारोह की कुछ झलकियां

स्वतंत्रता दिवस समारोह मे सम्मिलित होते हुए प्रधान महानिदेशक, प्रधान महालेखाकार एवं व.उपमहालेखाकार महोदय

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर कार्मिकों को संबोधित करते हुए माननीय प्रधान महानिदेशक एवं प्रधान महालेखाकार

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर कार्मिकों को संबोधित करते हुए उप महालेखाकार महोदया

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर IAAS प्रशिक्षुओं के साथ वृक्षा रोपण करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर IAAS प्रशिक्षुओं के साथ प्रधान महानिदेशक, प्रधान महालेखाकार, व. उप महालेखाकार, निदेशक व उप महालेखाकार

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर सम्मिलित होमगार्ड अधिकारी व होमगार्ड जवान

गीता सार - कर्म है महान

श्री दिपेश कुमार गुप्ता
वरि. लेखापरीक्षक

ये कहानी है हमारे पड़ोस में रहने वाले पंडित जी की | जो न तो पंडिताई करते हैं और ना ही किसी पंडित के घर पैदा हुए है, लेकिन फिर भी पूरा शहर और अब तो इन्टरनेट के बदौलत जाने कहाँ-कहाँ के लोग उन्हें पंडित जी के नाम से जानते हैं | उनका असली नाम तो नवल किशोर है |

एक सरकारी कार्यालय में ज़िन्दगी भर काम करने के बदले ठीक-ठाक पेंशन लेकर रिटायर हुए हैं | उनके घर में उनकी धर्मपत्नी हैं जो बहुत सौम्य स्वभाव की हैं, 2 बेटे हैं जो बैंगलोर में अच्छे जॉब्स पर हैं | अब सवाल ये उठता है कि सभी लोग, यहाँ तक कि उनकी पत्नी भी उन्हें पंडित जी क्यूँ कहती हैं ? इसके पीछे एक कहानी है, जो कि उनके जीवन में घटी सच्ची घटना भी है |

बात उस दौर की है जब हमारे देश में कंप्यूटर रेवोलुशन शुरू ही हुआ था | तमाम बड़े सरकारी कार्यालयों में कंप्यूटर लगाए जा रहे थे और सभी कमचारियों को उन्हें चलाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा था | नवल किशोर जी हमेशा से पढने और नई चीजें सीखने के बड़े शौक़ीन थे | उन्होंने न सिर्फ लिटरेचर बल्कि धार्मिक ग्रन्थ भी बड़े शौक से पढ़े थे | उनकी पत्नी के शब्दों में कहें तो रामायण और श्रीमद भागवद गीता तो वो घोट कर पी गए थे | अक्सर घर और ऑफिस की महफ़िलों में बहुत सुन्दर शब्दों में रामचरितमानस की चौपाइयां और गीता के श्लोकों की बड़ी सरल और आसान व्याख्या करते थे |

अब जब कंप्यूटर सीखने की बारी आई तो उन्होंने इसमें भी बड़ी रूचि के साथ भाग लिया , जबकि उनके साथ वाले जाने क्यों बड़े बेमन से और कतराते हुए इस प्रशिक्षण में भाग ले रहे थे | उन्हें प्रशिक्षण देने वाली टीम कहीं बाहर से आई थी | चार जवान लड़के, जो शायद अभी-अभी पढाई पूरी करके निकले थे, इन्हें सिखा रहे थे | इस टीम में एक लड़का था जो बहुत शांत और सौम्य स्वभाव का था | बड़ी शान्ति से इन्हें सिखाता था और कभी भी बेवकूफी भरे सवालों पर गुस्सा नहीं होता था | इस लड़के का नाम राहुल था | नवल किशोर जी को राहुल बहुत पसंद था |

वह कुछ दिनों से देख रहे थे कि राहुल कुछ शांत-सा रहने लगा था | उसके चेहरे पर हमेशा रहने वाली मुस्कान मानो कहीं गायब-सी हो गई थी | अक्सर कहीं खोया-सा रहता और एक अजीब-सी उदासी उसकी आँखों में बनी रहती | नवल किशोर जी अनुभवी इंसान थे | वे जानते थे कि अगर इस उम्र में डिप्रेशन ने पकड़ लिया तो ज़िन्दगी खराब कर देगा | इसलिए उन्होंने राहुल से बात करने की सोची और एक दिन उसे डिनर पर अपने घर बुलाया | राहुल आया और खाना खाने के बाद पंडित जी उसे साथ लेकर सैर (Walk) पर निकल गए | फिर बातों-बातों में उसकी परेशानी का कारण पूछा जिसे पहले तो वो टालता रहा लेकिन फिर उसने अपनी परेशानी का कारण बता ही दिया |

दरअसल पिछले 5 सालों से राहुल किसी बड़े प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा था, और लगातार मेहनत के बाद भी तीसरी बार उसे असफलता ही मिली थी | जिसने उसकी हिम्मत पूरी तरह से तोड़ दी थी | उसे लगने लगा था कि उसकी ज़िन्दगी के 5 साल बस यूंही बर्बाद हो गए और अब उसका कोई भविष्य नहीं होगा | इतनी मेहनत के बाद मिली असफलता ने उसे चौथे और आखरी प्रयास के लिए भी मायूस कर दिया था | वो अब आगे परीक्षा की तैयारी नहीं करना चाह रहा था, और कहीं न कहीं अपनी असफलता के लिए खुद को ही ज़िम्मेदार मान रहा था, अपने आपको दोषी ठहरा रहा था कि शायद उसकी मेहनत में ही कमी रह गई थी |

यह सुनकर नवल किशोर जी ने राहुल को श्रीमद भागवद गीता का यह श्लोक सुनाया -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

नवल किशोर जी बोले "*जानते हो राहुल, इसका मतलब क्या है ? ये श्लोक श्रीमद भागवद गीता के दूसरे अध्याय का 47वा श्लोक है | जब अर्जुन रणभूमि पर अपने सगे-सम्बन्धी, अपने गुरु, भाई और दोस्तों को देखकर युद्ध छोड़ देना चाहते हैं, तब भगवान श्री कृष्ण उसे गीता का उपदेश देते हैं | और गीता का ये श्लोक तो सम्पूर्ण गीता के सारांश जैसा है | इसका अर्थ अगर समझ लें तो जीवन की सारी परेशानियां दूर हो जाए |*"

राहुल ने पूछा, "*आखिर क्या है इस श्लोक का अर्थ, और इसमें ऐसा क्या है जो आप इसे हर परेशानी का समाधान बता रहे हैं ?*'

नवल किशोर जी बोले, "*इसका अर्थ है कि हे अर्जुन ! तेरा अधिकार कर्म करने में है, उसके फल में नहीं | तू कर्म के फल के प्रति आसक्त ना हो या कर्म ना करने के प्रति प्रेरित ना हो | अगर आसान शब्दों में कहें तो हम में से हर कोई कुछ भी करने से पहले उस काम के परिणामों के बारे में सोचता है | जैसे बच्चे पढाई शुरू करने से पहले अच्छे मार्क्स के बारे में सोचने लगते हैं ,बिज़नसमैन दिन की शुरुआत में ही शाम तक मटिरिअल पूरी तरह से यूज़ हो जाने की इच्छा रखता है, इंजिनियर नक्शा बनाने से पहले ही मास्टरपीस बनाने की ख्वाहिश रखता है, गृहणी सब्जी काटने से पहले सोचती है कि आज का खाना खाकर तो उसका परिवार उसकी तारीफ़ करेगा | हर कोई अपने हर काम से अच्छे फल की उम्मीद करता है | जबकी हमारे हाथ में सिर्फ और सिर्फ अपना काम करना है | उसका परिणाम क्या होगा, कैसा होगा, इस पर ना तो हमारा कोई नियंत्रण (Control) है और ना ही अधिकार (Right)|*"

यह सुनकर राहुल बोला, "*अगर हम परिणाम की इच्छा ही नहीं रखेंगे तो उस काम के लिए प्रेरणा (Motivatiion) क्या रह जाएगी | ऐसे तो हम कोई भी काम बस टाइम-पास के लिए करेंगे, नहीं?*"

नवल किशोर जी बोले "*नहीं, इसका ये मतलब नहीं कि हम अपने काम में रूचि ना लें या अपने प्रयास में कोई कमी रखें | इसका मतलब ये है कि हम समझ लें कि हमारे बस में सिर्फ हमारा काम है | उदाहरण के लिए एक बच्चे का काम पूरे साल भर सिर्फ अच्छे से पढ़ाई करना है | लेकिन परीक्षा का परिणाम और भी कई बातों पर निर्भर करता है जैसे कई बार कॉपी जांचने वाले के मूड पे भी | ऐसे में यदि परीक्षा में मार्क्स उस बच्चे की उम्मीद से कम आ जाते हैं तो उसे ना तो अपनी योग्यता पर शक करना है और ना ही आगे मेहनत करने में कोताही करनी है | हमें हर हाल में अपना सर्वश्रेष्ठ देना है | उसके बाद क्या होना है, ये ईश्वर पर छोड़ देना है | किसान जब खेत में बीज बोता है, रात-रात जागकर फसल को पानी देता है, तब वो अपना काम कर रहा है लेकिन अगर सूखा पड़ जाए या उसकी फसल को कोई बीमारी लग जाए, तब किसान को अपने आपको इसकी वजह नहीं समझना चाहिए क्यूंकि ये बात उसके बस में नहीं थी*|"

नवल किशोर जी आगे बोले, "*जीवन में बहुत कुछ ऐसा है जिस पर हमारा कोई वश नहीं है, लेकिन खुद पर और हमारे कर्म पर हमारा पूरा वश है | इसलिए उसमे कमी नहीं रहनी चाहिए | जिस दिन हम ये बात समझ लेंगे तो जीवन की छोटी-*

बड़ी समस्या में हौंसला नहीं हारेंगे | खुद पर विश्वास रखेंगे और हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए तैयार रहेंगे |"

नवल किशोर जी की बातों ने राहुल पर जादू जैसा असर किया और उसने मन-ही-मन एक बार फिर पूरा जोर-लगाकर परीक्षा देने की तैयारी करने का फैसला कर लिया था | कुछ दिन बाद जब नवल किशोर जी के ऑफिस में कंप्यूटर प्रशिक्षण पूर्ण हुआ और सिखाने वाली टीम को विदा किया जा रहा था तब राहुल ने सबको इकठ्ठा किया और कहा, "*हम सबको हमेशा कुछ न कुछ सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए | शिक्षक कहीं भी और किसी भी रूप में मिल सकते हैं और हो सकता है कि कोई ऐसा शिक्षक मिल जाए जो जीवन के प्रति आपका नजरिया ही बदल दे | मुझे भी यहाँ एक गुरु मिले जिन्हें जीवन का बहुत अनुभव है और इस अनुभव को बांटना भी आता है वो गुरु हैं नवल किशोर जी जिन्हें आज से मैं पंडित कहकर पुकारूँगा क्यूंकि पंडित का अर्थ है 'ज्ञानी'*" और इस तरह से नवल किशोर जी का नाम तब से 'पंडित जी' पड़ गया |

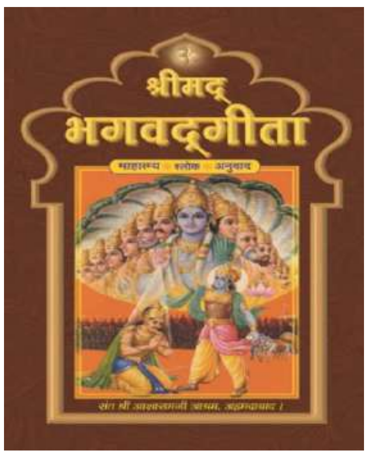

<u>बस एक बात है, और कुछ नहीं</u>

श्री चिंटू गुप्ता
व. लेखापरीक्षा

मुस्कुराओ ऐसे की लगे, मुस्कुराहट जिंदगी की जरुरत है |
जब कोई आपको देखे तो कहे, वाह क्या खूबसूरत जिंदगी है |
बस एक बात है, और कुछ नहीं ||

जीवन में उलझने बढ़ने लगे तो, खुद को थोडा ढील दे,
क्योकि गांठ को खोलने का यही सही तरीका है |
बस एक बात है, और कुछ नहीं ||

शिकायते उन्ही से होती है, जिससे दिल से रिश्ता होता है |
जिंदगी के सफर में कोई आता है तो कोई जाता है|
बस एक बात है, और कुछ नहीं ||

मतलबी लोगों ने बदल दिया दुनियाँ की सोच को
किसी से किसी की खैरियत भी पूछो तो
समझते है जरुर कोई काम होगा |
बस एक बात है, और कुछ नहीं ||

सीखना तो सब को है, फर्क सिर्फ इतना है |
किसी ने किताबों से सीखा है,
किसी को जिंदगी ने सिखाया है|
बस एक बात है, और कुछ नहीं ||
सफर का मजा तो मंजिल पर पहुंचने से ज्यादा सफर में है |

बस एक बात है, और कुछ नहीं ||
समझो तो बहुत कुछ है ||
नहीं तो बस एक बात है,||

माइक्रोप्लास्टिक राक्षस

श्री माचवराम श्रीनिवास राव
स. पर्यवेक्षक

अगर आप अपना पेट खोलें... माइक्रोप्लास्टिक!
हम इसे पानी के साथ पीते हैं। हम इसे हवा में साँस लेते हैं। हम इसे खाने के साथ खाते हैं। माइक्रोप्लास्टिक, जो पहले ही विभिन्न रूपों में प्रकृति पर आक्रमण कर चुका है... हमारे अंदर भी प्रवेश कर रहा है। यह हमारे फेफड़ों को अवरुद्ध कर रहा है। यह हमारे दिमाग को तेज़ कर रहा है। यह हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को नुकसान पहुँचा रहा है। हम इस संकट के कारण हैं। इसका समाधान खोजना हमारी ज़िम्मेदारी है।
प्लास्टिक कचरे के बढ़ते ढेर से हम पहले से ही भयभीत हैं। कल के प्रभावों के बारे में सोचकर ही हम सिहर उठते हैं। इसी बीच, 'माइक्रोप्लास्टिक' की ओर से एक और आपदा आ रही है! यह प्लास्टिक कचरे का एक रूप है। आकार में छोटा होने के बावजूद, यह सभी पांच तत्वों को प्रभावित कर रहा है। इस संकट की गंभीरता को समझने के लिए, हमें समस्या की जड़ों में जाना होगा। प्लास्टिक हमारे देश में सात या आठ दशक पहले आया था। ऐसा कहा जाता है कि 'प्लास्टिक' शब्द ग्रीक शब्द 'प्लास्टिको' (जिसे पुनर्चक्रित(recycled) किया जा सके) से उत्पन्न हुआ है। कच्चा प्लास्टिक पेट्रोलियम कचरे से बनता है। यह एक लचीला पदार्थ है। इसे किसी भी तरह से पुनर्चक्रित किया जा सकता है। इसका जितनी बार चाहें उतनी बार उपयोग किया जा सकता है। इसकी कीमत भी कम है। इसके कारण, औद्योगिक क्षेत्र में पैकेजिंग की समस्या हल हो गई है। आम आदमी को सामान या सब्जी लेने के लिए बाहर जाते समय कपड़े के थैले ले जाने के झंझट से मुक्ति मिल गई है। लेकिन आने वाली आपदा की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। शुरुआत में तो सब ठीक था। कुछ समय बाद, स्थिति बदल गई। इसका उपयोग तेजी से बढ़ा। प्लास्टिक कई रूपों में बाजार में आया जैसे कुर्सियाँ, टिफिन बॉक्स, मसाला बॉक्स, फलों के कटोरे, कटोरी, मग, बाल्टी... इसने धीरे-धीरे सभी के जीवन पर आक्रमण कर दिया।

हाल ही में, माइक्रोवेव ओवन का इस्तेमाल बढ़ गया है। ओवन में रखे प्लास्टिक के कंटेनर गर्मी से थोड़ा पिघल जाते हैं और हानिकारक कण खाने में मिल जाते हैं। ये पेट तक पहुँच रहे हैं। कुछ लोग तो अपने बच्चों को पिलाने वाला दूध भी प्लास्टिक की बोतलों के साथ ओवन में डाल रहे हैं। इस तरह, वे अनजाने में अपने बच्चों को प्लास्टिक का एक बड़ा हिस्सा दे रहे हैं। डॉक्टर चेतावनी देते हैं कि इससे बच्चों का विकास धीमा हो सकता है। जब हम कटिंग बोर्ड पर सब्ज़ियाँ काटते हैं, तो चाकू की धार से बने सूक्ष्म प्लास्टिक कण कुकर में पक जाते हैं और प्लेट में खाने के रूप में दिखाई देते हैं। ये धीरे-धीरे पाचन तंत्र तक पहुँचते हैं। शुरुआती अध्ययनों से पता चलता है कि यह स्थिति आगे चलकर कोलन कैंसर का कारण बन सकती है। इंसानों की परवाह न करने वाले माइक्रोप्लास्टिक... क्या सिर्फ़ बेज़ुबान जानवरों को ही छोड़ते हैं? ये भेड़, बकरियों और मुर्गियों के शरीर में जा रहे हैं, चाहे पानी में घुले हों या चारे में। कई बार ऐसा भी होता है कि मछली जैसे समुद्री जीवों के वध में मांस से ज़्यादा प्लास्टिक कचरा पाया जाता है। इन्हें खाने पर ये अवशेष शरीर में प्रवेश कर कोशिकाओं में फैल जाते हैं। अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं ने मुर्गी के अंडों में भी माइक्रोप्लास्टिक के अंश पाए हैं। हाल ही में पता चला है कि जब खेत में लगे फसल के पौधे मिट्टी से पानी सोखते हैं, तो माइक्रोप्लास्टिक तनों में भी घुसकर सब्ज़ियों और साग-सब्ज़ियों तक पहुँच जाते हैं। निर्माता कुछ रासायनिक खाद के दानों पर प्लास्टिक की परत चढ़ा देते हैं। यह माइक्रोप्लास्टिक के खाने में घुसपैठ करने का एक तरीका है। इटली में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि सेब, सब्ज़ियों और गाजर में माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा ज़्यादा थी। कुछ कंपनियाँ च्युइंग गम को मुलायम बनाने के लिए उसमें भी माइक्रोप्लास्टिक मिला रही हैं। 'टॉक्सिक लिंक' नामक एक कंपनी ने पाया है कि बाज़ार में उपलब्ध प्रत्येक किलोग्राम आयोडीन युक्त नमक में 90 तक छोटे प्लास्टिक के टुकड़े और प्रत्येक किलोग्राम चीनी में 69 तक छोटे प्लास्टिक के टुकड़े पाए जाते हैं। अनुमान है कि भारतीय प्रतिदिन औसतन ग्यारह ग्राम नमक और दस चम्मच चीनी खाते हैं। इस प्रकार, वे अनजाने में ही सूक्ष्म प्लास्टिक का सेवन कर रहे हैं। एक अध्ययन के अनुसार... प्रत्येक व्यक्ति हर हफ़्ते भोजन के साथ पाँच ग्राम प्लास्टिक निगल जाता है। यानी, वे हर महीने चार क्रेडिट कार्ड निगल रहे हैं।

पैकेजिंग फ़ैक्टरियाँ, कपड़ा उद्योग और पेंटिंग कंपनियाँ माइक्रोप्लास्टिक कचरे के आधे हिस्से के लिए ज़िम्मेदार हैं। हम अपना सामान ढोने के लिए जिन प्लास्टिक

कवर का इस्तेमाल करते हैं, फ़ूड डिलीवरी कंपनियाँ बिरयानी और फ्राइड राइस परोसने के लिए जिन डिब्बों का इस्तेमाल करती हैं, कैंटीन या चायदानी में हम जो चाय और पानी पीते हैं, ये सब जल्दी ही फेंक दिए जाते हैं। ये धीरे-धीरे माइक्रोप्लास्टिक में बदल रहे हैं। यहाँ तक कि हमारे द्वारा पहने जाने वाले सिंथेटिक कपड़ों के ढेर भी अक्सर 'सूक्ष्म' रूपों में बदल जाते हैं और धोने या फेंकने पर प्रदूषण फैलाते हैं। ऐसा लगता है कि कुछ प्रकार के सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण में नई चमक और कोमलता लाने के लिए माइक्रोप्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है। हालाँकि, कुछ ब्रांड अपने उत्पादों में 90 प्रतिशत तक माइक्रोप्लास्टिक भर रहे हैं। अधिकांश प्लास्टिक सामग्री का उपयोग टूथब्रश बनाने में भी किया जाता है। जैसे-जैसे ब्रश पुराना होता जाता है, उसके ब्रिसल्स ढीले होते जाते हैं। जब आप अपने दाँत ब्रश करते हैं, तो घर्षण के कारण वे टूटकर आपके पेट में चले जाते हैं। इसीलिए दंत चिकित्सक सलाह देते हैं कि ब्रश का इस्तेमाल एक या दो महीने से ज़्यादा न करें, चाहे वह कितना भी अच्छा क्यों न हो। प्लास्टिक के निर्माण में दस हज़ार से ज़्यादा रसायनों का इस्तेमाल होता है। अमेरिका जैसे देशों ने सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण में कुछ प्रकार के प्लास्टिक छर्रों पर पहले ही प्रतिबंध लगा दिया है। अमेरिका कम से कम अगले दस वर्षों में देश से एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय आँकड़ों के अनुसार, प्लास्टिक प्रदूषण में हम पाँचवें स्थान पर हैं। भारत दुनिया के कुल कचरे का बीस प्रतिशत तक उत्पन्न करता है।

समाधान?

हर बार जब हम गाड़ी निकालते हैं, तो टायरों के घर्षण से ढेर सारा माइक्रोप्लास्टिक पर्यावरण में मिल जाता है। इस समस्या के समाधान के तौर पर, ब्रिटेन के एक स्टार्टअप ने 'टायर कलेक्टिव' नाम का एक उपकरण बनाया है। यह टायरों से निकलने वाले माइक्रोप्लास्टिक को प्रकृति में मिलने के बजाय एक कूड़ेदान में इकट्ठा करता है। बाद में, इस कचरे का इस्तेमाल औद्योगिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। ऑस्ट्रेलिया के आरएमआईटी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा आविष्कृत चुंबकीय पाउडर को अगर पानी में छिड़का जाए, तो यह चुंबक की तरह माइक्रोप्लास्टिक को अपनी ओर खींच लेता है। यह जल संसाधनों को शुद्ध

करता है। बैंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान के शोधकर्ताओं ने भी इसी तरह का एक हाइड्रोजेल का आविष्कार किया है। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने एक कदम आगे बढ़कर समुद्री जल से माइक्रोप्लास्टिक इकट्ठा करने के लिए रोबोट तैनात किए हैं। हालाँकि, ये सभी प्रयास अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में हैं। अभी भी बहुत कुछ हासिल करना बाकी है। तब तक, हम बस '3-R' सिद्धांत का उसी ईमानदारी से पालन कर सकते हैं।

R. रेड्युस - प्लास्टिक का उपयोग कम करें।

R. री यूज़ - पुनः उपयोग करें। जहाँ तक संभव हो, पुनः उपयोग को प्राथमिकता दें।

R. री साईकल - पुनर्चक्रण करें। संचित प्लास्टिक को सुरक्षित तरीकों से पुनर्चक्रित करें।

अगर हम 'प्लास्टिक न खरीदें। प्लास्टिक में न खाएँ' का संकल्प ले लें, तो आधी समस्या हल हो जाएगी। बाकी आधी समस्या सरकारों और क़ानूनों की ज़िम्मेदारी है। लेकिन, आने वाली पीढ़ियों को हमें जो देना चाहिए... वह प्लास्टिक की मुद्रा, प्लास्टिक के सामान या प्लास्टिक का कचरा नहीं है। प्लास्टिक के खतरे से मुक्त एक स्वच्छ दुनिया! हाल ही में, आंध्र प्रदेश के गुंटूर शहर में 1 अगस्त से सिंगल-यूज़ प्लास्टिक पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया है। लोगों को कपड़े के थैलों का इस्तेमाल करने की सलाह दी गई है। विशेष टीमें निरीक्षण करेंगी और जुर्माना लगाएंगी।

<u>प्लास्टिक से दूर रहें...</u>

जीवनशैली में बदलाव और कुछ सावधानियों से, घर के अंदर और बाहर, दोनों जगह माइक्रोप्लास्टिक के प्रभाव को नियंत्रित किया जा सकता है।

- जितना हो सके सूती कपड़े पहनें।
- शौचालय और टाइलें साफ़ करने के लिए माइक्रोप्लास्टिक से बने रसायनों के बजाय, सिरके और नींबू के रस में मिला हुआ पानी इस्तेमाल करें।
- पैक की हुई प्लास्टिक की पानी की बोतलों को जितना हो सके दूर रखें।
- खाद्य वितरण कंपनियों को फीडबैक के रूप में प्लास्टिक के कंटेनरों के विकल्प खोजने की सलाह दी जानी चाहिए।

- माइक्रोवेव ओवन में खाना गर्म करने के लिए कांच या सिरेमिक के कंटेनर चुनें।
- घर के लिए ज़रूरी सब्ज़ियाँ बगीचे या गमलों में उगाना सबसे अच्छा है।
- रोज़मर्रा की ज़िंदगी से सिंगल-यूज़ प्लास्टिक को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर देना चाहिए।
- सिंथेटिक कालीनों और गद्दों का इस्तेमाल न करना ही बेहतर है।
- भले ही यह काम चरणों में किया जाए, रसोई की ज़रूरतों के लिए कांच, चीनी मिट्टी, मिट्टी और स्टेनलेस स्टील के बर्तन उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- प्लास्टिक की कुर्सियों और मेजों की बजाय लकड़ी और बांस के फर्नीचर का इस्तेमाल करना बेहतर है।
- बच्चों के लिए प्लास्टिक के खिलौने नहीं खरीदने चाहिए। न ही उन्हें उपहार में देना चाहिए।
- प्लास्टिक की प्लेटें, चम्मच, कप और गिलास पार्टियों और मनोरंजन से दूर रखने चाहिए।
- वॉशिंग मशीन का इस्तेमाल पूरी क्षमता से करना चाहिए, उसमें एक या दो कपड़े डाले बिना। इससे माइक्रोप्लास्टिक के उत्सर्जन में कुछ हद तक कमी आने की उम्मीद है।
- सौंदर्य प्रसाधनों का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए, भले ही उनमें प्लास्टिक के माइक्रोबीड्स हों। इसका उल्लेख संबंधित उत्पादों की पैकेजिंग पर किया जाएगा।

कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका "धरा गुर्जरी" के वर्ष 2024-25 के प्रथम अंक का विमोचन करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय

बदलते दौर का हमारे जीवन पर प्रभाव

श्री हरी सिंह
लेखापरीक्षक

बदलते समय के साथ-साथ मानव जीवन में भी कई तरह के बदलाव हुए हैं। जैसे कि नई सोच, नई तकनीक, किसी भी कार्य को करने के लिए नई उर्जा एवं नए तौर तरीके इत्यादि। यह हमारे व्यक्तिगत विचार, जीवन, समाज, संस्कृति, रहन-सहन और सोच पर गहरा प्रभाव डाला है एवं औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण, और डिजिटलीकरण द्वारा अर्थव्यवस्था का स्वरूप ही बदल दिया है।

हालांकि परिवर्तन संसार का नियम है, इसलिए इस परिवर्तन का कुछ फायदे तो कुछ नुकसान भी जरुर होते हैं। अब यह हम पर निर्भर करता है कि इस बदलते दौर में हम इसे किस प्रकार अपनाएं जिससे कि इसका हमारे जीवन पर नुकसान कम हो और ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके।

इस बदलते समय का हमारी जिंदगी पर असर डालने वाले इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव कुछ इस प्रकार हैं :-

सकारात्मक प्रभाव एवं लाभ :-

1. **तकनीकी प्रगति :** आज का समय तकनीकीकरण के क्षेत्र में क्रांति का समय है। पिछले कुछ वर्षों में तकनीक ने हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। स्मार्ट डिवाइस,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(AI),कंप्यूटर, इंटरनेट, टैब और मोबाइल फोन जैसे उपकरणों ने हमारी दैनिक गतिविधियों को सरल और आसान बना दिया है। जहाँ पहले जानकारी प्राप्त करने में कई दिनों से लेकर वर्षों लग जाते थे, वहीं अब बस कुछ सेकंडों और मिनटों में ही जानकारी मिल जाती है।

2. **शिक्षा का क्षेत्र** : यह बदलते दौर का ही प्रभाव है कि आज गाँव से लेकर शहर तक हर कोई घर बैठे ही देश-विदेश की शिक्षा प्राप्त कर पा रहा है। ऑनलाइन के माध्यम से घर बैठे ही पढ़ना एवं पढ़ाना दोनों काम काफी आसन और सरल हो गया है। आज सीमित संसाधनों वाले क्षेत्र के छात्रों को भी उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जा रहा है। पहले जिन लड़कियों और महिलाओं को कई पाबंदियों या स्कूल का घर से दूर होने के कारण शिक्षा ग्रहण करने में उन्हें परेशानी होती थी, आज वे लोग ऑनलाइन

के माध्यम से बिना किसी रूकावट और डर के शिक्षा के साथ-साथ दूसरे क्षेत्रों में भी एक नई अपनी मुकाम हासिल कर रही है।

3. **चिकित्सा और स्वास्थ्य का क्षेत्र** : स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में जहाँ पहले कई प्रकार के बिमारियों का इलाज नहीं हो पाने के कारण लोगों और पशुओं की मृत्यु हो जाती थी, वहीँ आज के जमाने में कई तरह की मेडिकल तकनीक जैसे कि लेजर द्वारा ऑपरेशन किया जाना, दृष्टिबाधितों को आधुनिक इलाज द्वारा आँखों में रोशनी प्रदान करना एवं दिव्यांगों को कृत्रिम अंग से सुसज्जित करके उन्हें जीवन जीने की एक नई उम्मीद देना इत्यादि।

4. **व्यापार का क्षेत्र** : आज के समय में देश-विदेश के विभिन्न भागों में व्यापार करना पहले की तुलना में काफी सरल और आसान होने के साथ-साथ अपने व्यापार को विस्तृत रूप से व्यापक बनाने के लिए भी कई सारे ऐसे प्लेटफॉर्म्स (फ्लिप्कार्ट, अमेज़न, मिन्त्रा और जिओ मार्ट इत्यादि) उपलब्ध हो गये हैं, जो लोकल व्यापारियों को एक वैश्विक मंच प्रदान करता है।

5. **मनोरंजन का क्षेत्र :** आज सोशल मिडिया मनोरंजन का एक ऐसा क्षेत्र बना हुआ है, जहाँ हम अपनी बात को पूरी दुनिया के सामने बड़ी सरलता से एवं कम समय में पहुंचा सकते हैं। फेसबुक, व्हाट्सअप, इन्स्टाग्राम, यू-ट्यूब, स्नेप चैट और ट्विटर (एक्स) इत्यादि सोशल मिडिया के कुछ ऐसे माध्यम हैं जिस पर बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सबके लिए मनोरंजन की विषय-वस्तु असीमित मात्रा में उपलब्ध होती है।

6. **संस्कृति और भाषा पर प्रभाव :** वैश्वीकरण के कारण सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ है, जिससे विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का प्रभाव बढ़ा है। जैसे कि आईपीएल का अलग-अलग भाषाओँ में प्रसारण करना, क्षेत्रीय लोक गीत को सार्वजनिक मंचों पर जगह मिलना एवं क्षेत्रीय व्यजनों का प्रचार-प्रसार करना इत्यादि।

7. **शोध और संशाधन :** बदलते दौर में शोध, खोज और संसाधनों के क्षेत्र में काफी विकास हुआ है। जैसे कि आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से भूमि के नीचे की धातु, खनिज-लवण एवं इंधन इत्यादि का पता लगाना काफी आसान और सरल हो गया है एवं बीते कुछ वर्षों में अन्तरिक्ष के क्षेत्र में भी कई ऐसे कार्य हुए हैं जिसमें से एक अन्तरिक्ष यात्री को सकुशल धरती से अन्तरिक्ष ले जाना एवं वहां से वापस लाने की तकनीक शामिल है।

नकारात्मक प्रभाव एवं चुनौतियाँ :-

1. **डिजिटलीकरण होना :** जैसा कि हम सब को पता है हमारा भारत देश कृषि प्रधान देश है ऐसे में आज के इस बदलते दौर में हमारा लगभग हर कार्य प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से डिजिटलीकरण हो जाने के कारण देश की जनसंख्या का एक बहुत बड़े हिस्से (किसान वर्ग) को डिजिटलीकरण से जोड़ना एवं उन्हें इसका भागीदार बनाना एक बहुत बड़ी चुनौती बनकर सामने आई है।
2. **शहरीकरण की ओर पलायन :** ग्रामीण क्षेत्रों से खेती-बाड़ी को छोड़कर बड़ी संख्या में लोग शिक्षा, रोजगार और बेहतर जीवन के लिए शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। इससे शहरीकरण बढ़ा है और उनके सामाजिक रहन-सहन में बदलाव आया है।
3. **चिकित्सा :** आज इस बदलते दौर में भी हमारे देश के कई गाँव और कस्बे ऐसे हैं जहाँ अबतक ना कोई सड़क पहुंची है ना ही कोई बिजली। ऐसी परिस्थिति में आवश्यकता पड़ने पर जरुरतमंदों तक चिकित्सा की सुविधा पहुँचाने में काफी चुनौतियाँ आती है।
4. **स्वास्थ्य :** बदलते युग ने लोगों की जीवन शैली और मानसिकता को भी बदल दिया है। जहाँ पहले मनुष्य जीवन सरल और धीमा था, वहीं आज पहले से अधिक व्यस्त, तनावग्रस्त और एक दुसरे से आगे निकलने की होड़ में लगा हुआ है।
5. **गोपनीयता :** आज लगभग हर व्यक्ति खुद को इस नये जमाने के बदलते ढंग में ढालने की कोशिश कर रहा है। और दुसरे से आगे निकलने की इस उधेड़बुन में अपनी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन को सार्वजनिक करते जा रहा है। जिसके कारण उसकी गोपनीयता को सुरक्षित रखना एक बड़ी चुनौती है।
6. **अत्यधिक निर्भरता :** आज हर जगह यह देखा जा रहा है कि बच्चे हो या बुजुर्ग हर कोई जरूरत से ज्यादा तकनीकी चीजों पर निर्भर हो रहे हैं। जिसका कारण उनकी सोचने एवं अपने दम पर दूसरों से कुछ अलग करने की क्षमता कम होते जा रही है। यहाँ तक कि हमारी जिंदगी कट, कॉपी और पेस्ट पर ही चल रही है।
7. **दैनिक दिनचर्या में बदलाव एवं अकेलापन :** आजकल पारिवारिक और सामाजिक संरचना में भी कई बदलाव आये हैं। जहाँ पहले संयुक्त परिवार की प्रधानता थी, वहीं अब छोटे और एकल परिवार को बढ़ावा देने के साथ-साथ अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया जा रहा है।
8. **परंपरागत नौकरियों में कमी :** आज नये-नये तकनीक से लैस मशीनों के कारण रोजगार में कमी आई है। यहाँ तक कि आर्टिफिसियल इंटेलीगेन्स (AI) के आ जाने से घंटों का काम कुछ मिनटों में हो जा रहा है जिसके कारण बड़ी संख्या में लोगों को अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ रहा है।

9. **पर्यावरणीय प्रभाव :-** आज औद्योगिकीकरण, शहरीकरण एवं प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने से पर्यावरणीय संकट जैसे कि वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण, जल संकट बढ़ते जा रहा है। बेमौसम बारिश होना, बादल फटना, आंधी-तूफान आना, बाढ़ आना, भूकम्प एवं भूस्खलन होना इत्यादि इसी का बुरा प्रभाव है।

निष्कर्ष

उपरोक्त कथनों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि इस बदलते दौर का प्रभाव हमारे जीवन के हर पहलू पर स्पष्ट दिखाई देता है एवं यह अपने साथ ढेर सारी सुविधाओं के अलावा कई सारी चुनौतियाँ भी लाया है। तकनीकी विकास, सामाजिक बदलाव, आर्थिक क्रांति, शिक्षा, चिकित्सा-स्वास्थ्य, शोध-संशाधन एवं मानसिकता में आये नये नये बदलाव ने हमारे जीवन को एक नई दिशा की ओर अग्रसर किया है। इस नये बदलाव में, हमें अपना व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक जीवन के बीच समझदारी एवं संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है ताकि हम नई तकनीकों, विचारों और आर्थिक प्रगति के साथ-साथ अपने मूल्यों को न खोते हुए सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को भी निभा सकें जिससे हमारा जीवन और समाज दोनों विकास की ओर अग्रसर हो सके।

मुस्कुराहट की ताक़त

श्री अनिल ओड़
डी.इ.ओ.

मुस्कुराहट एक तोहफा है, जो हर कोई दे सकता है,
बिना शब्दों के रिश्तों को, गहराई से कह सकता है।

यह दिल की एक भाषा है, जो सबको समझ आती है,
ग़म की राह में भी अक्सर, ये ही राह दिखलाती है।

थकी आँखों को चमक दे, टूटी उम्मीदें जोड़ दे,
सूनी राहों में भी जाकर, चुपचाप उजाला कर दे।

बोझिल मन को सहला देती, बिना बोले बात करे,
दुख के मौसम में भी ये तो, हौसले की बात करे।

न पैसे की ज़रूरत इसे, न किसी बड़ी वजह की चाह,
छोटा सा ये भाव ही, कर देता है दिल से राह।

जो जीवन की ठोकर में भी, मुस्कान को रख ले कायम,
समझो उसने सीख लिया है, जीने का असली नियम।

मुस्कुराओ हर सुबह ऐसे,जैसे जीवन ने दी हो नयी रोशनी,
क्योंकि ये मुस्कान ही है वो ताक़त,जो बना सकती है हर दिन को सुनहरी कहानी।

सहायक निदेशक, राजभाषा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत हिन्दी मे सर्वाधिक कार्य करने वाले व पत्रिका मे उत्कृ लेख लिखने वाले कार्मिकों को पुरस्कार प्रदान करते हुए

सहायक निदेशक, राजभाषा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत हिन्दी मे सर्वाधिक कार्य करने वाले कार्मिकों को पुरस्कार प्रदान करते हुए

सोशल मीडिया

श्री बिनय कुमार
लेखापरीक्षक

सोशल मीडिया आज के दौर में लोगों के बीच संचार के क्षेत्र में एक ऐसी क्रांति बन कर उभरी है, जिसमें बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक हर वर्ग के लोग, निर्माता से लेकर उपभोक्ता तक, शिक्षक से लेकर छात्र तक, जवान से लेकर किसान तक, सरकार से लेकर जनता तक, अमीर से लेकर गरीब तक, साधु से लेकर संत तक, कानून से लेकर अपराधी तक एवं वैज्ञानिक से लेकर ज्ञानी तक लगभग हर कोई किसी ना किसी तरह से इससे खुद को कनेक्ट पाते हैं। लोगों के बीच सोशल मीडिया खास इसलिए भी हो जाता है क्यूंकि यह हमें पृथ्वी से लेकर ब्रह्माण्ड तक की हर एक वस्तु, हर एक क्षेत्र (ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, व्यवसाय और रहन-सहन, खान-पान इत्यादि) के बारे में स्पष्ट एवं विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह सोशल मीडिया का ही प्रभाव है कि आज हम चाहे दुनिया के किसी भी कोने में क्यों ना हो, हम अपनी बात को पूरी दुनिया के सामने बड़ी सरलता से एवं कम समय में पहुंचा सकते हैं। फेसबुक, व्हाट्सअप, इन्स्टाग्राम, यू-ट्यूब, स्नेप चैट और ट्विटर (एक्स) इत्यादि सोशल मीडिया के कुछ ऐसे माध्यम हैं जिसके द्वारा हम देश-दुनिया के दिन-प्रतिदिन के समाचार से अवगत होना, अपने मनोरंजन की चीजों को देखना, अपने परिवार एवं दोस्तों के साथ से गुफ्तगू करना इत्यादि। दुसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि किसी का व्यक्तिगत विचार हो या फिर किसी समूह का विचार हो, सोशल मीडिया पूरी दुनिया के सामने इसे रखने का एक सुनहरा मंच प्रदान करती है।

सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अभिन्न अंग बन चुका है। जो हर वक़्त (सोते-उठते, जागते, खाते-पीते, पढ़ते-लिखते, खेलते-कूदते, पूजा-पाठ एवं घूमते-फिरने के साथ-साथ यहाँ तक की कई लोग टॉयलेट के समय भी सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं।

जिस प्रकार हरेक सिक्के के दो पहलू (कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक प्रभाव) होते हैं वैसे ही सोशल मीडिया के भी कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक प्रभाव हैं। जो निम्नानुसार हैं :-

सकारात्मक प्रभाव:-

1. क्रेता-विक्रेता द्वारा विज्ञापन के माध्यम से अपनी वस्तुओं का खरीद-बिक्री करना।
2. घर बैठे शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ विभिन्न नौकरियों के लिए आवेदन करना भी काफी सरल और सुगम हो गया है।
3. घर से दूर अपने कर्तव्य का पालन एवं देश की सेवा में लगे जवान अपने परिवार जनों से बातचीत करना (ऑडियो कॉल एवं वीडीओ कॉल द्वारा) एवं नये-नये तकनीकों से अवगत होना।
4. हमारे देश की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा यानी कि किसानों के लिए भी फसल उपजाने सम्बन्धी काफी जानकारियाँ जैसे कि फसल की अच्छी पैदावार कैसे हो, कम समय में ज्यादा फसल उपजाना, मौसमी फसल के बारे में जानकारी पाना, फसल को कीड़े लगने से बचाना एवं कौन-सा खाद किस फसल के लिए और कब डालना है इत्यादि सारी चीजों में सोशल मीडिया का एक बहुत बड़ी भूमिका है।
5. सरकार द्वारा समय-समय पर जनहित में जारी योजनाओं को जनता तक पहुँचाने में सरल एवं आसान हो गया है। देश के लोगों द्वारा भी सरकार तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए सोशल मीडिया एक प्रबल माध्यम बन गया है।
6. कोई भी ऐसा व्यक्ति जो खाना नहीं बनाना चाहता है वह घर बैठे ही ऑनलाइन अपने लिए खाना आर्डर कर सकता है।
7. बढ़ते अपराध को कम करने एवं अपराधियों को पकड़ने में भी सोशल मीडिया का एक अहम रोल होता है।
8. वैज्ञानिक अपने अनुसन्धान एवं शोध को आम लोगों तक पहुंचाने के लिए एवं उनसे बात करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया जाता है। लेकिन उन्हें गोपनीयता, डेटा साझाकरण और गलत सूचना फैलाने जैसी नैतिक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है।

नकारात्मक प्रभाव:-

1. **जरूरत से उपयोग:** छोटे छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्गों द्वारा जरूरत से ज्यादा सोशल मीडिया का प्रयोग कर किया जा रहा है, जिसके कारण इन्हें समय की बर्बादी होने के साथ-साथ कई तरह की समस्याओं का सामना भी करना पड़ रहा है। जैसे कि समय से पहले आँखों में कम दिखना, फिजिकल

एक्टिविटी नहीं होने के कारण उनका शरीर सुस्त, मोटापा और कमजोर हो जाना, सोचने की क्षमता पर असर पड़ना एवं दोस्तों के अभाव होने के कारण चिड़चिड़ापन हो जाना।

2. **निजी जानकारी का सार्वजनिक होना:** गोपनीयता एवं इसकी सुरक्षा की कमी होने के कारण निजी जानकारी का सार्वजनिक हो जाना चिंता का विषय है।
3. **साइबर क्राइम:** आजकल सोशल मीडिया के द्वारा लोगों को ऑनलाइन फ्रॉड और साइबर क्राइम का शिकार बनाया जा रहा है।
4. **अफवाहों का फैलना:** सोशल मीडिया पर सच्चाई की तुलना में अफवाहें और गलत जानकारियाँ जंगल में आग की तरह फैलना।
5. **डीप फेक फोटोज एवं वीडियोज:** आजकल ए.आई. के कारण किसी भी व्यक्ति का डीप फेक फोटोज एवं वीडियोज बनाना एक बहुत बड़ी समस्या बनकर उभरी है।
6. **चिंता और अवसाद में वृद्धि:** अपने परिवार जनों से दूरी बढ़ने के कारण और वास्तविक दुनिया के रिश्तों से अलगाव होने के कारण चिंता और अवसाद की समस्यायें।
7. **छात्रों के लिए विकर्षण:** छात्रों द्वारा सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग पढ़ाई से उसका ध्यान विकर्षण की ओर जा रहा है।
8. **बच्चों एवं किशोरों के लिए खतरा:** छोटे बच्चों और किशोरों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग करते समय जाने-अनजाने में कुछ अनचाहे अश्लील वीडियोज का सामना हो जाना बेहद ही चिंताजनक विषय है।

निष्कर्ष:

सोशल मीडिया एक ऐसा शक्तिशाली यंत्र है जो समाज और व्यक्तिगत स्तर पर कई सारे लाभ प्रदान करता है। हालाँकि इससे होने वाले नुकसान को अनदेखा नहीं किया सकता है। इसलिए सोशल मीडिया का उपयोग जिम्मेदारी पूर्वक एवं समझदारी से करना अति आवश्यक हो जाता है ताकि इसका अधिक से अधिक लाभ लिया जा सके। हमें इसके हानिकारक प्रभावों एवं अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सोशल मीडिया के उपयोग को अपने जीवन की दैनिक गतिविधियों और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के बीच एक सीमा निर्धारित करने के साथ-साथ स्क्रीनिंग टाइम को कम करने की बेहद आवश्यकता है, साथ ही छोटे-छोटे बच्चों को सोशल मीडिया या मोबाइल फोन से लत छुडवाने के लिए उनके साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करना चाहिए

और कुछ ऐसे नये-नये खेल खेलना चाहिए एवं उनके मनोरंजन की कुछ किताबों को पढ़ाने की आदत डालना चाहिए जो मानसिक और शारीरिक रूप से उनके सेहत के लिए फायदेमंद हो। चूँकि हमसब को पता है कि आज के बच्चे कल के भविष्य हैं। इसलिए आज हमें इस प्यारे नन्हे मुन्हे बच्चों के लिए एक ऐसा सकारात्मक वातावरण बनाना चाहिए जो आगे हमारे देश के लिए काफी गर्वित करने वाला साबित हो। युवाओं के लिए भी यह बेहद जरुरी है कि सोशल मीडिया से खुद के लिए कुछ समय निकाल कर उस समय को सदुपयोग अपनी दैनिक दिनचर्या में ज्ञानवर्धक चीजों एवं प्रेरणादायक कहानियों को पढ़ने में लगाना चाहिए। क्यूंकि स्वस्थ रहेगा इंडिया तभी तो आगे बढेगा इंडिया।

सोशल मीडिया चलाना बहुत आसान है,
हद से ज्यादा इसका उपयोग सेहत के लिए बड़ा नुकसान दायक है॥
इसके अच्छाईयों को अपनाओ और बुराईयों से खुद को दूर हटाओ,
यही मेरा आप सब से आहवान है॥

अंतिम क्षमा

श्री ऋषव कुमार मिश्रा
लेखापरिक्षक

"ललिता मैम!
ललिता दी!
अम्बुलेंस! कोई जल्दी से अम्बुलेंस बुलाओ!"

ये आख़िरी आवाज़ें थीं जो मैंने सुनीं, फिर मेरी दृष्टि धुंधली हो गई और इंद्रियाँ जवाब देने लगीं। हर एक ताक़त मुझसे दूर होने लगी। दिल पर पकड़ कमज़ोर पड़ गई।

मैं बेहतर महसूस करते हुए जागी। चारों ओर देखा तो पाया कि मैं अस्पताल के वार्ड में अकेली थी। काम पर देर होने की चिंता से मैं जल्दी से अपना सामान समेटने लगी।

"ललिता मुखर्जी?"

"जी?"

एक सफेद कोट पहना युवक मेरे पास आया।

"शायद आपने महसूस किया होगा—"

"हाँ-हाँ, मैं बिल भर दूंगी, बस अपना बैग ढूंढ़ने दीजिए। मैं बहुत लेट हो रही हूँ... हे भगवान!"

उसने देखा तो उसकी सांस थम गई।

अस्पताल की गाउन पहने, सख्त बिस्तर पर लेटी हुई ललिता थी।

उसने सिर पकड़कर कहा, **"मैं पागल हो गई हूँ!"**

"नहीं," युवक ने तीखे स्वर में कहा,

"आप मर चुकी हैं।"

"लेकिन डॉक्टर साहब—"

"मैं डॉक्टर नहीं हूँ, मैं आपको परलोक की ओर ले जाने आया हूँ।"

ललिता ठंडी जमीन पर घुटने टेक गई, वह अभी भी फिनायल की तीखी गंध महसूस कर रही थी। सब कुछ बहुत गलत, बहुत अजीब लग रहा था। उसने दिल पकड़ा—लेकिन वह धड़क नहीं रहा था। भयावह सच्चाई उसके सामने थी। उसने अपनी लाश को देखा, फिर युवक को।

"आपको दिल का दौरा पड़ा था।"

"अब क्या होगा?"

"हमने आपकी ज़िंदगी का विश्लेषण कर लिया है। हम आपको स्वर्ग भेज सकते हैं, लेकिन एक समस्या है।"

"ओ युवा, ये सब अवास्तविक लग रहा है। स्वर्ग-नरक क्या होता है? मैं अपने परिवार को एक बार फिर देखना चाहती हूँ। कृपया मुझे दिखा दीजिए।"

"आप यहाँ तेरह दिन रहेंगी। आपका फैसला तेरहवें दिन आएगा। तब तक आपका शोक समाप्त होगा। लोग आगे बढ़ जाएंगे, और आपको भी।"

ललिता ने गहरी सांस ली।

युवक ने कहा, **"समस्या ये है कि स्वर्ग जाने के लिए आपको उन लोगों को माफ़ करना होगा जो आपके साथ सबसे क्रूर थे।"**

ललिता ने फिर से गहरी सांस ली।

"मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी उन लोगों के लिए जी—जिन्होंने कभी आभार नहीं दिखाया। मुझे बताओ, वे कौन लोग हैं?"

"पहली है आपकी सौतेली माँ, निराली मुखर्जी।"

यह नाम सुनते ही उसका मुँह कड़वा हो गया। उसकी माँ की मौत बचपन में हो गई थी। पिता ने एक साल के अंदर दूसरी शादी कर ली, क्योंकि सबको चिंता थी कि एक माँ के बिना घर कैसे चलेगा। निराली के चार बच्चे थे—दो लड़के और दो लड़कियाँ। ललिता को नौकरानी समझकर ट्रीट किया जाता था। किसी काम में देर लगती तो कहते, **"तुम सबसे बड़ी हो, अगर तुम नहीं करोगी तो कौन करेगा?"** निराली उसकी मनमानी सुनती नहीं थी, और 15 साल की उम्र में उसका रिश्ता एक उससे दोगुने उम्र के आदमी से किया। उसने मना किया तो निराली ने कहा, **"अपना खून होता तो ऐसा दर्द नहीं सहती।"** बाद में उसने किसी और रिश्ता को स्वीकार कर लिया।

फिर उसके सौतेले भाई-बहन—सविता, निवेदिता, अनिरुद्ध और नयन—जो उसे परिवार का हिस्सा तक नहीं मानते थे।

फिर आया कॉलेज की दुश्मन—शर्मिष्ठा घोष, जो हमेशा तंग करती थी; उसके ससुराल वाले, जो सोचते थे कि उन्होंने 45 साल के बेटे से शादी कराकर बड़ा उपकार किया। पति, जो उसके जीवन में एकमात्र दयालु थे, शादी के दो साल बाद गुजर गए। वह अचानक विधवा बन गई और बदनसीब हो गई। फिर भी उसने अपने ससुराल वालों की सेवा की, बैंक में क्लर्क का काम किया और घर में नौकरानी जैसी मेहनत की।

उसने अपने सारे दुख और त्रासदी सोचकर याद किए, लेकिन अंततः उन्हें छोड़ने का फैसला किया। बदला लेना चाहती थी, लेकिन अपने दुःख में डूबी हुई थी। उसने भगवान से ताक़त मांगी कि वह माफ़ कर सके—उम्मीद थी कि अगली ज़िंदगी में वे समझ पाएंगे। बड़ी मुश्किल से उसने दिल छूटने दिया।

"तो अब खत्म?" उसने पल्लू अपने चेहरे पर मलते हुए पूछा, जैसे ज़िंदा रहते करती थी।

"नहीं।" युवक ने जवाब दिया।

"एक और है जिसे आपको माफ़ करना है।"

“कौन?” ललिता ने पूछा।

युवक ने शीशा निकाला।
शीशे में उसने अपनी परछाई देखी और आवाज़ गूँजी—

“तुम्हारे साथ सबसे ज़्यादा क्रूर तुम ही रही हो।”

उसने युवक को देखा, लेकिन वह चुप था। आवाज़ दिमाग़ में गूंजती रही।

सिर में दर्द उठा। उसने कान पकड़ लिए। यादें बाढ़ की तरह आईं—दूसरों को पहले रखना, अपने सपनों को छोड़ना, खुद को भूखा रखना, नकारात्मक सोच, निरंतर त्याग—पहले सौतेले भाई-बहनों के लिए, फिर ससुराल के लिए। वह हमेशा कहती, “मैं पर्याप्त नहीं हूँ, सुंदर नहीं हूँ, पवित्र नहीं हूँ।” उसने क्रोध को दबाया और खुद को नुकसान पहुंचाया—लंबे घंटे काम, बिना पोषण के। उसने खुद को एक जेल में बंद कर रखा था।

यह सब समझते हुए वह जोर से रोई, अपने प्रति की गई क्रूरता पर।

“युवक,” उसने आंसू भरे स्वर में कहा, **“मुझे अकेला छोड़ दो। मैं नहीं जानती कि मैं उस एक को कैसे माफ़ कर पाऊँगी जिसने मुझसे सबसे ज़्यादा निर्दयता की—खुद को।**

कैसा लगता है ?

श्रीमती विद्या. वी. नायर
पर्यवेक्षक

शब्दों का भी स्वाद होता है
सत्य हमेशा कडवा लगता है
असत्य हमेशा मीठा लगता है।

भूल का भी एक कद होता है।
खुद का हो तो छोटा लगता है
और दूसरों का हो तो बड़ा लगता है।

बात का भी एक अंतर होता है
अच्छा लगता हो तो छोटी लगती है
और ना अच्छा लगता हो तो लम्बी लगती है।

अश्रु का भी एक तापमान होता है
खुशी का हो तो बड़ा शीतल लगता है
और दर्द का हो तो बहुत गरम लगता है

स्वार्थ का भी एक संबंध होता है
ज़रूरत हो तब गहरा लगता है
और ज़रूरत न हो तब व्यर्थ लगता है।

पिताजी

श्री माचवराम श्रीनिवास राव
स. पर्यवेक्षक

क्या आप मेरु पर्वत को जानते हैं?'

मैंने इसके बारे में किताबों में पढ़ा है...'

क्या आपने अक्षय पात्र के बारे में सुना है, या क्या आपको पता है कि कामधेनु और कल्पवृक्ष क्या देती है?'

मुझे याद है कि बचपन में मैंने इसके बारे में सुना था...'

पिताजी इन सबका मूर्त रूप हैं! उनका व्यक्तित्व मेरु पर्वत जितना विशाल है। चाहे उनका पेशा कितना भी छोटा हो या उनका पद कितना भी ऊँचा हो, पिता एक कल्पवृक्ष हैं। कहते हैं पैसे पेड़ों पर उगते हैं, है ना? ऐसा कोई पेड़ कभी नहीं देखा था, लेकिन अपने पिता की कमीज की जेबें देखी थी, जहां आप जो भी पूछते थे, वे देते थे। पिताजी के पास सब कुछ हमेशा मौजूद रहता है। उनका दिल प्यार से भरा रहता है, चाहे जितना भी खोजो, वो वापस आ ही जाता है। हमको इस बात का दुःख क्यों है कि हमने मेरु पर्वत नहीं देखा, जबकि हमारी आँखों के सामने माउंट एवरेस्ट जितने पिताजी खड़े है!

हर साल हम फादर्स डे मनाते हैं। हमने व्हाट्सएप पर ढेरों उद्धरण साझा किए और ढेर सारी बधाइयाँ दीं। क्या पिताजी बस इतने ही हैं? क्या वो बस एक याद है जिसे एक दिन याद करके अगले ही दिन भुला दिया जाता है? क्या हम सचमुच अपने पिता की कीमत समझते हैं? अगर हाँ, तो हमारे मज़बूत पंख निकलते ही हमारे पिता बेवजह के हिसाब-किताब में क्यों उलझ जाते हैं? हाल ही में मैंने हमारे समाचार पत्र में एक लेख पढ़ा। किसी ने अपने माता-पिता को बहुत बूढ़े होने पर घर से निकाल दिया और अन्य मामले में किसी ने अपनी मां को घर संभालने, बच्चों की परवरिश करने और खाना बनाने के लिए रख लिया और पिता को छोड़ दिया। लेकिन उनके पिता एक बेकार बोझ क्यों बनते जाते हैं, ऐसा क्यों है कि उनके

पिता, जिन्होंने काम करना छोड़ दिया है, बेकार होते जा रहे हैं? वह अपनी झुर्रियों वाली, खुरदरी बूढ़ी त्वचा को अपने पिता के रूप में पेश करने में क्यों शर्मिंदा है? आजकल हर शहर में वृद्धाश्रम बढ़ रहे हैं। यहां तक कि आजकल यह व्यवसाय बन गया है।

बहुत लोगो ने अपने बचपन में देखा होगा कि "आपके पिताजी का इतिहास रहा होगा कि वे अपने घर की दहलीज़ पर आने वाले हर व्यक्ति को कभी भूखा वापस नही भेजते थे"। आजकल तो बच्चे ऐसे व्यक्ति को दो बार खाना खिलाने के लिए भी दस बार सोच रहे हैं। जब हम बच्चे थे, तो हम अपने पिता को यह कहते हुए बहुत परेशान करते थे "हमें यह चाहिए, हमें वह चाहिए"। क्या वह बिना मना किए हर दिन हमारे लिए कुछ न कुछ लेकर नहीं आते थे! पहले हम छोटे थे तब उन्हें बिना खाना नहीं खाकर रुलाते थे, और अब उनको बिना खाना खिलाए रुलाते हैं... क्या हमेशा पिताजी रोने ही चाहिए ?

पिता का मतलब बहादुर है। वो हाथ हैं जिन्होंने अपने कंधे पर थपथपाते हुए कहा था कि अगर हम कड़ी मेहनत करेंगे तो हमें फल ज़रूर मिलेगा। वो ज्ञान के सागर हैं जिन्होंने गीता का सार एक ही सूत्र में पिरो दिया है। हमे अपने पिता के अनुभव से बड़ी प्रेरणा और कहाँ मिल सकती है! जिस हाथ ने सबको सब कुछ दिया है, उसने बदले में कुछ नहीं माँगा। बस आखिरी पल में थोड़े से स्नेह की उम्मीद है! क्या हम इसमें मदद नहीं कर सकते? अगर मदद नहीं, तो वो दान है! अगर दान समझो, तो पुण्य है! आइए, अपने पिता को कम से कम इस उम्मीद के साथ जीने दें कि पुण्य में पुण्य जुड़ता जाएगा। आइये उसे जीवित रखें!

क्या तुम्हें पापा याद हैं, जिन्होंने अपने दिल में आसमान छूता प्यार छुपाया था, और कभी खुलकर ज़ाहिर भी नहीं किया? नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं! क्योंकि, अगर दुनिया में कोई एहसास है जो शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता, तो वो है "**पापा का प्यार**"!

****

उद्विग्न मन

सुश्री मीनाक्षी कुमारी
(बहन श्री ऋषव कुमार मिश्रा)
लेखापरीक्षक

मन तू उद्विग्न क्यों है?
भला क्यों खुद से बैर रखता है?
जब पता है समय ठीक नहीं
तो भला क्यों धीरज खोता है?
सत्य है समय सबका एक नहीं
:ख के बाद ही सुख का अनुभव होता है
मन भला तू उद्विग्न क्यों है?
तू क्यों धीरज खोता है?

मन की हर बात निराली है
समय समय पर परीक्षा है
उत्तीर्ण होना बस तेरा काम रहा
फिर क्यों इधर उधर ध्यान भटकता है?
मन भला तू उद्विग्न क्यों है?
भला क्यों धीरज खोता है?

दोष किसी का नहीं इसमें
अगर तू विफल होता है
सब भाग्य का खेल मान कर
क्यों नहीं तू आगे बढ़ता है?

मन भला तू उद्विग्न क्यों है?
भला क्यों धीरज खोता है?

हर कोई अपने कर्म का भोगी है
समय के साथ परिचय होता है
अपने पराए सब मे अंतर है
फिर क्यों विश्वास कर सबके लिए तू रोता है?
मन भला तू उद्विग्न क्यों है?
भला क्यों धीरज खोता है

समय सबसे बड़ी औषधि है
इसे गले से उतरना नहीं पड़ता है
वो स्वयं घावों को भर के
आगे के लिए तुझे तैयार करता है
धीरे से ही सही पर सब ठिक होता है
आज नहीं तो कल सबका वक्त बदलता है
तो मन भला तू उद्विग्न क्यों है?
क्यों भला तू धीरज खोता है?

आज का अभिमन्यु

श्री सिद्धार्थ पाठक
आशुलिपिक

नमस्कार ! आप सभी महाभारत युद्ध में 13वें दिन की उस स्थिति से तो परिचित होंगे ही जहाँ एक युवा अभिमन्यु अनेक सैनिक, कुछ रथी, महारथी, अतिरथियों से युद्ध में जूझता है, कुछ ऐसी ही स्थिति का सामना आज के युग का हर युवा कर रहा है| जहाँ सैनिक की भूमिका उसका सामाजिक परिवेश और रथी, महारथी की भूमिका उसका मोबाइल निभा रहा है| मैं स्वयं एक युवा होते हुए इसे गंभीरता से अनुभव कर सकता हूँ |

सामान्यतः इन्टरनेट मोबाइल और सोशल मीडिया जैसी सेवाएँ हमारी युवा पीढ़ी के जीवन में विकास को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं| यह सभी सूचना और ज्ञान का एक बृहद भंडार हमारे युवा को उपलब्ध कराते हैं| मोबाइल के माध्यम से ही संभव है कि देश कि किसी भी कोने में बैठा युवा देश के बड़े से शिक्षक से घर बैठे ज्ञान प्राप्त कर सकता है| डिजिटल और तीव्र सूचना प्रणाली कि जरिये देश का युवा अपने को विश्वभर में व्याप्त विविध गतिविधियों से जुड़ कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है परन्तु प्रश्न तो यह कि क्या आज का युवा इन सभी सेवाओ का लाभ सही तरह से उठा पा रहा है क्या सूचना का बृहद भण्डार उसके व्यक्तित्व का विकास कर पा रहा है क्या देश कि किसी कोने में बैठा विद्यार्थी ज्ञान अर्जन कर पा रहा है अंशतः नहीं |

जिस तरह युद्ध में कई महारथी अभिमन्यु को घायल करने के लिये थे उसी तरह मोबाइल में उपलब्ध विविध एप्लीकेशन्स केवल विद्यार्थी को भटकाने मात्र के साधन बन गए है| भ्रमित करने वाले कई एप्लीकेशन्स के बीच से उसका चयन करना जो उसके व्यक्तित्व का विकास करे या ज्ञान अर्जन करने में सहायक हो, मुश्किल होता जा रहा है| इस भटकाव के बीच से अपने लक्ष्य का चुनाव “घास में सुई ढूँढने-सा” प्रतीत होता है| हास्यास्पद है कि यदि आपके विद्यार्थ एप्लीकेशन के चुनाव में जरा भी चुके तो आपके हाथ का समय हाथों से रेत के समान निकल जाता है |

आज के डिजिटल युग में मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने हमारी जिंदगी को बहुत सरल और मनोरंजक बना दिया है। परंतु इसके साथ ही यह भी एक

बड़ा सवाल है कि क्या ये उपकरण हमारे लिए हमेशा लाभकारी हैं? खासकर छात्रों की पढ़ाई पर इसका प्रभाव कैसा पड़ रहा है। आज की पीढ़ी अधिकतर समय मोबाइल फोन और सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म्स में व्यस्त रहती है, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है।

मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने बच्चों और युवाओं के जीवन में मनोरंजन और जानकारी का नया स्रोत तो प्रदान किया है, लेकिन इसकी अधिकता ने उनके समय प्रबंधन को खराब कर दिया है। कई बार छात्र पढ़ाई के समय भी मोबाइल में लगे रहते हैं, जिससे उनकी एकाग्रता बिखर जाती है। पढ़ाई में मन न लगना, ध्यान कम होना और समय का व्यर्थ होना जैसी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर फालतू की बातें, गेम्स, और वीडियो देखने में घंटों बिता देना पढ़ाई के लिए उपलब्ध समय को कम कर देता है।

इसके अलावा, मोबाइल और सोशल मीडिया पर अत्यधिक निर्भरता से नींद की कमी भी होती है, जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। नींद पूरी न होने के कारण पढ़ाई के दौरान याददाश्त कमजोर हो जाती है और तनाव बढ़ता है। परिणामस्वरूप छात्र अपने शैक्षिक प्रदर्शन में गिरावट महसूस करते हैं। कई बार सोशल मीडिया पर मिली गलत जानकारी भी छात्रों के सोचने और समझने की क्षमता को प्रभावित करती है।

हालांकि, यदि मोबाइल और सोशल मीडिया का उपयोग सही दिशा और समय सीमा में किया जाए, तो यह बहुत फायदेमंद भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन अध्ययन सामग्री, शैक्षिक वीडियो, और सूचना के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का सकारात्मक उपयोग पढ़ाई को सरल बना सकता है। परंतु इसके लिए छात्रों को स्वयं अनुशासन और समय प्रबंधन सीखना होगा।
अतः यह आवश्यक है कि युवा पीढ़ी विभिन्न एप्लीकेशन्स और भटकाव की स्थिति में अर्जुन के समान अपने ध्यान को साधते हुए सभी भटकावों से दूर रहे छात्र मोबाइल और सोशल मीडिया के उपयोग में संयम बरतें और पढ़ाई को प्राथमिकता दें। अभिभावकों और शिक्षकों को भी चाहिए कि वे बच्चों को इस विषय में जागरूक करें और सही मार्गदर्शन दें। इस प्रकार, मोबाइल और सोशल मीडिया हमारे जीवन के लिए वरदान बन सकते हैं, यदि हम उन्हें सही तरीके से उपयोग करें।

आज के युवा के सामने सबसे बड़ी चुनौती है—ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को बनाए रखना। यदि हम महाभारत की बात करें, तो अर्जुन का उदाहरण हमारे सामने आदर्श के रूप में आता है। जब अर्जुन से पूछा गया कि उसे पक्षियों के झुंड में क्या दिखता है, तो उसका उत्तर था—"सिर्फ पक्षी की आँख"। यही एकाग्रता उसे महान योद्धा बनाती है। आज के छात्रों को भी अर्जुन जैसी एकाग्रता की आवश्यकता है, जो उन्हें मोबाइल और सोशल मीडिया के शोर से हटाकर अपने लक्ष्य की ओर केंद्रित रखे।

दूसरी ओर, अभिमन्यु का उदाहरण हमें यह सिखाता है कि अधूरी जानकारी कितना नुकसान पहुँचा सकती है। उसने चक्रव्यूह में प्रवेश करने की विधि तो जान ली, पर बाहर निकलने का मार्ग नहीं जान पाया, और परिणामस्वरूप वीरगति को प्राप्त हुआ। आज के छात्र भी सोशल मीडिया से टुकड़ों-टुकड़ों में जानकारी तो ले रहे हैं, पर गहराई से पढ़ने और समझने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है, जिससे उनका बौद्धिक विकास अधूरा रह सकता है।

इसलिए, यदि आज की पीढ़ी को सफल बनना है, तो उन्हें अर्जुन की एकाग्रता और पूर्ण ज्ञान के प्रति प्रतिबद्धता से प्रेरणा लेनी होगी। मोबाइल और सोशल मीडिया को साधन के रूप में उपयोग करें, साध्य न बनाएं। तभी वे अपने लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त कर सकेंगे।

"जरूरी है, अभिमन्यु सा साहस, अर्जुन सी एकाग्रता जरूरी है
जरूरी है डिजिटल साधन भी, पर उस पर एक सीमा भी जरूरी है"

<u>आधुनिक “माँ”</u>

श्री अनिल ओड़
डी.इ.ओ.

‘माँ’ के बारे में मै क्या ही लिख सकता हूँ क्योंकि माँ ने खुद मुझे लिखा है। किन्तु मै आज जो बात करने जा रहा हु वो आज के ज़माने कि ‘आधुनिक’ माँ के बारे में कहना चाहता हूँ।

आज के ज़माने कि माँ आधुनिक बन गई है क्योंकि वह आधुनिकीकरण का उपयोग भलीभांति करना सीख गई है, जिसकी वजह से आज उसमे माँ की ममता कुछ कम नजर आने लगी है। पहले के ज़माने में हम देखते थे कि माँ अपने बच्चे के लिए सब कुछ छोड़ना उचित समझती थी किन्तु आज ऐसा नहीं है, क्योंकि आधुनिकीकरण की नई उपलब्धिया इतनी हो गई है कि आज की माताएं उसके बिना रह नहीं सकती है, अपने बच्चे के बिना रह लेगी। यदि बच्चा चाहे जिद करे या परेशान करे तो उसे भी मोबाइल दे दिया जाता है। कई बार हम देखते है कि जैसे आज कि ‘माता’ बच्चे को जब स्कूल छोड़ने जाती है तो वह वाहन का उपयोग करती है तो उस वक्त भी वह बच्चे पे ध्यान कम और मोबाइल में ध्यान ज्यादा होता है। यह तो केवल मैंने एक उदाहरण दिया है किन्तु ऐसे कई काम है जहाँ देखा गया है कि माताएं बच्चे को छोड़ नए साधन पर ध्यान ज्यादा दे रही है, जिसमे मोबाइल और टीवी ने तो इनकी “ममता” को पूरी तरह से बदल ही दिया है।

हम ये सोच लेते है कि आधुनिकीकरण केवल पैसेवाली ‘माँ’ में ही नजर आ रहा है लेकिन एसा नहीं है जो मजदूर ‘माँ’ है उनमे भी यह देखा गया है कि वह अगर बच्चा रो रहा हो तो उसे मोबाइल दे देगी ताकि वो चुप हो जाये, मै ये नहीं कहता कि मजदूरी न करे किन्तु अपने बच्चे का भी ख्याल रखना जरुरी है। कई बार कुछ हादसे भी हो जाते है जिसकी वजह से बहुत गंभीर परिणाम भुगतना पड़ता है। कुछ पंक्तिया पेश है,

"मोबाइल की चमक में माँ अपने बच्चे की आँखों की चमक को देखना भूल जाती है।"

तस्वीरें तो खींचती हैं, लेकिन उन पलों को जीना भूल जाती हैं।

बच्चा पास बैठा होता है, लेकिन माँ दूर होती है — फोन की स्क्रीन में खोई हुई।

तकनीक ने दुनिया को पास ला दिया, पर माँ-बेटे के दिलों को दूर कर दिया।

अब लोरियाँ मोबाइल से आती हैं, और कहानियाँ यूट्यूब पर चलती हैं।

मैसेज का जवाब तुरंत देती हैं, लेकिन बच्चे के सवाल को टाल देती हैं – 'अभी नहीं, बाद में'।

हर सोशल मीडिया ट्रेंड पता है, लेकिन बच्चे की खामोशी की भाषा समझ नहीं आती।

"लाइक और कमेंट्स की दौड़ में, माँ अपने बच्चे की मासूम हँसी भूल जाती है।

तस्वीरों में मुस्कान तो कैद है, पर उन मुस्कानों के पीछे की यादें खो गई हैं।

माँ का स्पर्श अब मोबाइल की स्क्रीन से बदल गया है – नर्म है, लेकिन अनछुआ।"

आधुनिक होना ग़लत नहीं है, लेकिन **संवेदनशील और भावनात्मक रूप से जुड़े रहना** आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है। एक माँ का सबसे बड़ा तोहफा उसके बच्चे के लिए **उसका साथ और उसका समय** है — न कि केवल एक खिलौना या मोबाइल।

बुज़ुर्ग हमारे घर की जड़ें हैं

श्री दिपेश कुमार गुप्ता
वरि. लेखापरीक्षक

किसी ने सच ही कहा है — "जिस पेड़ की जड़ें मज़बूत होती हैं, वही आँधियों में भी टिके रहते हैं।" हमारे घरों में भी यही बात उतनी ही सटीक बैठती है। परिवार का पेड़ तभी हरा-भरा रह सकता है, जब उसकी जड़ें यानी हमारे **बुज़ुर्ग** मज़बूत, सम्मानित और प्रसन्न हों।

बुज़ुर्ग — अनुभव की चलती-फिरती किताब

हमारे दादा-दादी, नाना-नानी या माता-पिता — ये सब ऐसे लोग हैं जिनके अनुभवों में ज़िंदगी के हजारों रंग छिपे हैं। जब वे कोई कहानी सुनाते हैं, तो उसमें सिर्फ़ किस्से नहीं होते, बल्कि जीवन के सबक भी होते हैं। उनके पास गूगल नहीं था, लेकिन ज्ञान का भंडार ज़रूर था। आज की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में जहाँ हम "स्क्रॉल" करते हैं, वहीं वे "समझ" करते थे।

उनका साथ — घर का आशीर्वाद

बुज़ुर्ग किसी घर के लिए वैसा ही हैं जैसे दीपक की लौ के लिए तेल। वे सदा चुपचाप घर को उजाला देते रहते हैं। जब हम थककर घर लौटते हैं और उनकी मुस्कान देखते हैं, तो सारी थकान पलभर में मिट जाती है। उनके हाथों का खाना, उनकी दुआएँ और उनके आशीर्वाद में जो सुख है, वो किसी आलीशान होटल या विदेशी छुट्टी में नहीं मिल सकता।

आधुनिकता के बीच परंपरा का पुल

आज का समय आधुनिकता का है — नई सोच, नई तकनीक, नया अंदाज़। लेकिन अगर इस आधुनिकता की बुनियाद परंपरा से जुड़ी न हो, तो वह खोखली हो जाती है। बुज़ुर्ग इस आधुनिक जीवन और परंपरागत संस्कारों के बीच एक **पुल** हैं। वे हमें सिखाते हैं कि "फैशन बदल सकता है, पर मूल्य नहीं।"

कभी-कभी हँसी का खज़ाना भी!

यह कहना भी ग़लत नहीं होगा कि बुज़ुर्ग हमारे घरों के *'अनाउंस्ड कॉमेडियन'* होते हैं। कभी पुराने गीतों को नए बोलों में गाकर हमें हँसा देते हैं, तो कभी किसी टीवी रिमोट

को फोन समझकर हल्का-सा मज़ाक पैदा कर देते हैं। उनकी यह सादगी और मासूमियत ही उन्हें हमारे लिए इतना प्यारा बनाती है।

बदलते समय में उनका अकेलापन

पर दुर्भाग्य की बात है कि आज की व्यस्त जीवनशैली में बुज़ुर्ग कहीं पीछे छूटते जा रहे हैं।

कई बार उनके पास बातें करने वाला कोई नहीं होता, सुनने वाला कोई नहीं होता। टेक्नोलॉजी की दुनिया में "रील्स" तो हैं, पर "रिश्ते" कम हो गए हैं। हमें समझना चाहिए कि उन्हें हमारे समय की उतनी ही ज़रूरत है, जितनी हमें उनके अनुभव की।

आइए, उन्हें फिर से अपना समय दें

हर दिन का पाँच मिनट अगर हम अपने बुज़ुर्गों के साथ बिताएँ, उनकी बातें सुनें, पुराने एल्बम के पन्ने पलटें, तो न सिर्फ़ वे खुश रहेंगे — बल्कि हमारे भीतर भी अपनापन लौट आएगा।

यह संबंध दो-तरफा होता है: **उनकी मुस्कान हमारी शांति बन जाती है।**

एक छोटी-सी कविता ❀

जड़ें न दिखतीं, पर धरती को थामे रहती हैं,
समय की आँधियों में भी छाँव बन के रहती हैं।
हम शाखें हैं, पत्ते हैं, पर वो नींव हैं सारी,
बुज़ुर्ग हैं वो मिट्टी, जिसमें खुशियाँ हमारी।
चलो फिर लौट चलें, उन कहानियों के घर,
जहाँ दादी की गोद थी, और नाना की नज़र।

बुज़ुर्ग केवल अतीत नहीं, बल्कि वर्तमान की आत्मा हैं। उनकी उपस्थिति से घर में स्थिरता, संस्कार और सुकून आता है। उनका सम्मान करना सिर्फ़ फ़र्ज़ नहीं, बल्कि एक **जीवन शैली** होनी चाहिए। क्योंकि जब वे मुस्कुराते हैं, तो घर में *दीवाली* सी रोशनी फैल जाती है और जब वे उदास होते हैं, तो पूरा घर सूना लगने लगता है।

इसलिए याद रखिए —

"बुज़ुर्ग हमारे घर की जड़ें हैं;
अगर जड़ें सुखी हैं, तो पेड़ सदा हरा रहेगा।"

बायोमेट्रिक

श्री बिनय कुमार
लेखापरीक्षक

जब से ये बायोमेट्रिक आया है,
हमारी छोड़ो सबकी नींदें उड़ाया है ॥

रात में देर से सोना और सुबह जल्दी उठना,
लगभग सबकी आदत बन गई है,
और 9:40 के बाद आने वालों की आधी छुट्टी कट गई है ॥

यह बायोमेट्रिक आधार से लिंक है,
इसमें हाजिरी तभी बनता है, जब आईज करता ब्लिंक है ॥

जो पहले बोलते थे कि मेरे पास सिर्फ कीपैड है,
वो भी आज एंड्राइड निकाल रहे हैं,
चेहरा अच्छा हो या ना हो फिर भी बायोमेट्रिक के लिए सेल्फी लिए जा रहे हैं।

ये बायोमेट्रिक 100 मीटर के अंदर करता है सबको ट्रेस,
इसमें 10 मिनट का मिलता है सबको ग्रेस,
चाहे फिर वो बिनय हो या हो नरेश,
सबको दिखाना होता है इसमें अपना चेहरा फ्रेश ॥

हमारे HOD बस इतने मेहरबान हैं,
महीने में 2 बार 1-1 घंटे की छुट का प्रावधान है,
इससे ज्यादा देर हुआ तो तुम्हारा कहाँ ध्यान है ॥

बायोमेट्रिक के कारण समय से पहले लोग ऑफिस आ रहे हैं,
कैंटीन की चाय के साथ-साथ नास्ता और लंच भी खा रहे हैं,
और समय काटने के लिए कर्मचारी, ऑफिस से ज्यादा बाहर मंडरा रहे हैं ॥

ट्रैफिक सिग्नल हो या जाम, लेट होने का डर सबको सताता है,
समय से पहले ऑफिस पहुँचने के लिए 60 से उपर गाड़ी भगाता है ॥
इसलिए ध्यान रहे सप्ताह में 40 घंटे से सेवा कम ना हो,
9:30 में आओ और 6 में जाओ, ताकि कोई गम ना हो ॥

धरा गुर्जरी के वर्ष 2024-25 के प्रथम अंक के संबंध में विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त प्रतिभाव व प्रशंसा पत्र हेतु सभी कार्यालयों का सहृदय धन्यवाद एवं आभार

महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. [illegible]/2025-26/716 दिनांक 04.08.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय – प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
गुजरात, अहमदाबाद

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की [illegible] के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का [illegible] [illegible] आकर्षक है। [illegible]

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

Digitally signed by Uday Pratap Singh
Date: 08-08-2025 10:42:31

(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001
Tel: 080 22379335 Fax: 080-22264891
[illegible]

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

क्र. [illegible]/2025-26/[illegible] दिनांक: 11/08/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
गुजरात, अहमदाबाद

विषय- हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की [illegible] के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, [illegible]

पत्रिका का [illegible] [illegible] हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र [illegible] के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

भवदीय,

Digitally signed by Priyanka S. Goswami
Date: 11.08.2025 09:53:19

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ
[illegible]
लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226 010

Office of the Principal Director of Audit (Central), Lucknow
[illegible]
Lucknow, Uttar Pradesh - 226 010

पत्रांक सं.: [illegible]/2025-26/[illegible]/2025
दिनांक: 25-08-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक(राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात,
अहमदाबाद- 380009

विषय - हिन्दी गृह-पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह-पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर "नियति और नीयत", "क्या है जीवन!" एवं "शहीद का पैगाम" सारगर्भित एवं सराहनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। [illegible] ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by Rajesh Kumar Swyambhu
Date: 25-08-2025 10:32:24

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

Phone: 0522-2970789, 2989000 Fax: 0522 2970780 Email: [illegible]

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)
Office of the Director General of Audit (Central Expenditure)
डी जी ए सी आर भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110 002
DGACR Building, Indraprastha Estate, New Delhi-110 002

सं.ए.भा [illegible]/2025-26/323 दिनांक 28.08.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
लेखापरीक्षा भवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद, गुजरात – 380 009

28 AUG 2025

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक के संबंध में।

महोदया,

दिनांक 30.07.2025 को [illegible] आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की प्रति [illegible] प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ [illegible] एवं प्रशंसनीय हैं। [illegible]

इसके अतिरिक्त [illegible] कविताएं [illegible] हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

पूजा

सहायक निदेशक (राजभाषा)

गुर्जरी के वर्ष 2024-25 के प्रथम अंक के संबंध में विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त प्रतिभाव व प्रशंसा पत्र हेतु सभी कार्यालयों का सहृदय धन्यवाद एवं आभार

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2025-26/ 56 दिनांक- 19.08.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
गुजरात, अहमदाबाद

विषय : हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपकी हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"धरा गुर्जरी" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत सुखद व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण हैं। इनमें से "तू क्यों है परेशान", "कर्म ही महान गीता सार", "शहीद का पैगाम" और "सर्वोत्तम चाल ढूंढ" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(हस्ताक्षर) 19.8.[illegible]

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

महालेखाकार (ले. व ह.) केरल का कार्यालय, तिरुवनन्तपुरम
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक: 04-08-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), गुजरात,
अहमदाबाद

महोदया,

विषय : कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के वर्ष 2024-25 के प्रथम अंक की प्रति के संबंध में।

संदर्भ: आपके पत्र [illegible] दिनांक 31.07.2025.

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" के वर्ष 2024-25 के प्रथम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ [illegible] "सर्वोत्तम चाल ढूंढ", श्री विनय कुमार गुप्ता की [illegible] "कर्म ही महान गीता सार", श्री नरेश सिंह की [illegible], श्री लोकेश सिंह की कविता "शहीद का पैगाम", श्रीमती [illegible] की कविता [illegible], श्री [illegible] की कविता "माँ का [illegible]", [illegible] श्री [illegible] कुमार [illegible] का लेख [illegible] और सुश्री हेमा प्रजापति का लेख "बेहतर की तलाश में" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय है।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका "धरा गुर्जरी" की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 04-08-2025
12:02:15

सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
[illegible]

सं. प्र.नि.ले.प.(के.)/[illegible]/पत्रिका समीक्षा/ 01077829/2025 दिनांक 06-08-2025
सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
अहमदाबाद, गुजरात

विषय: कार्यालयीन पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों के संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक हैं। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक हैं। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएं
1.	सुश्री वनिता	[illegible] की कलम से
2.	सुश्री हेमा प्रजापति	बेहतर की तलाश में
3.	श्री विनय कुमार	आधुनिक दुनिया, अहंकार को न करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें।
4.	श्रीमती [illegible]	[illegible]
5.	श्री लोकेश सिंह	शहीद का पैगाम, जब भला तो ही भला अंत बुरे का बुरा
6.	श्री [illegible] पाण्डेय	सर्वोत्तम चाल ढूंढ
7.	सुश्री [illegible]	अहमदाबाद का ऐतिहासिक [illegible] स्वामी विवेकानंद ब्रिज

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

SUMITH S

सहायक निदेशक/राजभाषा

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान) का कार्यालय, पश्चिम बंगाल
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Director General of Audit (Mines), West Bengal

सं: [illegible] दिनांक - [illegible]

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
गुजरात, अहमदाबाद

विषय: हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" के प्रथम अंक के प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" का प्रथम अंक प्राप्त हुआ, हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है तथा इसकी साज-सज्जा भी आकर्षक है।

पत्रिका में समाहित सभी लेख, कविता, कहानी, [illegible] आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। सुश्री वनिता की "[illegible] की कलम से", श्री [illegible] की "[illegible]", श्री विनय कुमार गुप्ता की "तू क्यों है परेशान", श्री लोकेश सिंह की "शहीद का पैगाम" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सारांश: राजभाषा हिन्दी के विकास में इस पत्रिका ने अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। भविष्य में भी अपनी इस प्रगति को आगे बढ़ाते रहें, ऐसी कामना है।

भवदीय,

(हस्ताक्षर)

सहायक निदेशक
(राजभाषा)

हिंदी में प्रथम रचनाएं व लेखक

विधा	रचना	लेखक
हिंदी का प्रथम नाटक	'नहुष'	गोपालचंद्र गिरिधरदास
हिंदी की पहली रचना	'श्रावकाचार'	देवसेन
हिंदी का प्रथम महाकाव्य	'पृथ्वीराज रासो'	चंदबरदाई
खड़ी बोली हिंदी का प्रथम हाकाव्य	'प्रियप्रवास'	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
खड़ी बोली गद्य की पहली वना	"प्रेम सागर"	लल्लू लाल
हिंदी का प्रथम उपन्यास	'परीक्षा गुरु'	लाला श्रीनिवास दास
हिंदी की प्रथम एकांकी	"एक घूँट"	जयशंकर प्रसाद
हिंदी की प्रथम कहानी	'रानी केतकी की कहानी'	सैय्यद इंशाअल्लाह खाँ
हिंदी का प्रथम रिपोतार्ज	'लक्ष्मीपुरा'	शिवदान सिंह चौहान
हिंदी का पहला साहित्यिक त्रा वृत्तांत	'सरयू पार की यात्रा'	भारतेंदु हरिश्चंद्र
हिंदी की प्रथम आत्मकथा	'अर्धकथानक'	बनारसी दास
हिंदी की प्रथम जीवनी	भक्तिमाल	नाभादास
हिंदी का प्रथम निबंध	'राजा भोज का सपना'	राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद
हिंदी का प्रथम समाचार पत्र	'उदन्त मार्तण्ड'	पंडित जुगल किशोर शुक्ल

<u>पटोला बुनाई</u>

पटोला बुनाई गुजरात के पाटन में होने वाली एक पारंपरिक दोहरी इकत (double ikat) रेशमी बुनाई है, जिसका अर्थ है ताना (warp) और बाना (weft), दोनों के धागों को पैटर्न बनाने से पहले अलग-अलग रंगा जाता है। इस प्रक्रिया से एक ऐसा कपड़ा बनता है, जिसमें डिजाइन कपड़े के दोनों तरफ बिल्कुल एक जैसा दिखाई देता है। पटोला साड़ियां, को बनाना बहुत श्रमसाध्य और समय लेने वाला कार्य होता है, जो जटिल पैटर्न और रंगों के लिए जानी जाती हैं और इन्हें विशेष अवसरों पर पहना जाता है। इसकी विशेषता यह है कि डिजाइन कपड़े के दोनों तरफ समान रूप से दिखाई देता है। यह बुनाई गुजरात के पाटन में विकसित हुई और ऐतिहासिक रूप से शाही परिवारों और कुलीनों से जुड़ी हुई है।यह एक संरक्षित पारिवारिक परंपरा है, जो पीढ़ियों से चली आ रही है।पटोला को "ज्योग्राफिकल इंडिकेशन" (GI) टैग प्राप्त है, जो इसकी प्रामाणिकता को दर्शाता है।

भवनाथ महादेव मेला

भवनाथ महादेव मेला जूनागढ़ शहर में गिरनार पर्वत की तलहटी में स्थित भवनाथ महादेव मंदिर में आयोजित होता है। गिरनार उन नौ नाथों या देवताओं का पवित्र निवास है जिन्हें शाश्वत माना जाता है और 84 सिद्धों या धार्मिक रूप से उन्नत आत्माओं का भी। हिंदू पंचांग के अनुसार, माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि (फरवरी में) को मध्यरात्रि में इस मंदिर में भगवान शिव की महापूजा (प्रार्थना) होती है। पूजा समारोह शुरू होने पर नागा साधु जुलूस निकालते हैं। भगवान दत्तात्रेय की सुसज्जित मूर्ति वाली पालकी उनके आगे चलती है। हाथियों पर सवार होकर, वे ध्वजाएँ लिए और शंख बजाते हैं। रास्ते में, वे नृत्य करते हैं, तलवारबाज़ी और अन्य रोचक गतिविधियाँ करते हैं। वे आधी रात को मंदिर पहुँचते हैं और मृगी कुंड (तालाब) में स्नान करते हैं। महाशिवरात्रि यहाँ का प्रमुख वार्षिक मेला है जो अपनी आकर्षक अपील के कारण लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है।